अमरनाथ

की अमर कहानी



।। श्री गणेशाय नमः ।।

शंकर जी के श्रीमुख से पार्वती को सुनाई गई

श्री अमरनाथ की अमर कहानी



यह अमरेश महादेव की वह प्राचीन अमर कथा है जिसको कहने और सुनने वाला प्राणी अमर हो जाता था लेकिन भगवान शंकर ने स्वंय ही इस कथा का श्राप दे दिया कि अमर कथा को सुनने वाले प्राणी अब अमर नहीं होगें, नहीं तो सृष्टि की रचना और संहार का सारा क्रम बन्द हो जायेगा... लेकिन इसके साथ ही उन्होंने ये वरदान भी दिया कि इसे श्रद्धा पूर्वक सुनने वालों को अब भी मुक्ति प्राप्त होगी, वह शिवलोक को जायेंगे और इस लोक में उनकी मनोकामनायें पूर्ण होंगी।

मूल्य 20/-

अनुक्रमाणिका




अमर नाथ की
अमर कथा



शिवजी द्वारा दिये गये वरदान के अनुसार इस कथा को श्रद्धा पूर्वक पढ़ने या सुनने वाले मनुष्य शिवलोक को प्राप्त करते हैं।

यह अमर कथा माता पार्वती व भगवान शंकर का संवाद है। स्वयं शंकर भगवान इस कथा का वर्णन करने वाले हैं।

इस संवाद का संग्रह भृङ्गर्षि संहिता नीलमत पुराण और लावनी ब्रह्म ज्ञान से बड़े ही यत्न से किया गया है।

यह परम पवित्र कथा लोक व परलोक को सुख प्रदान करने वाली है।








प्रार्थना

सत्यं-शिवं-सुन्दरं महादेव हैं, सदा तपस्यालीन।
भक्तन-तन-मन पीर को, हरने में प्रवीन।।

मानुष तन घट पाप से, भरता है दिन-रैन।
बिन पूजे शिव स्वामी के, क्योंकर पावै चैन।।

मधुर नशीली पवन से, लोपित अन्तर का ज्ञान।
यों झूठ जग पाप का, करता मन सम्मान।।

जग के माँही भेजकर, महा कियो उपकार।
दीन भक्त विनती करे, करो दया दातार।।

आप अमर, प्रसंग अमर, सृष्टि चक्र महान।
अमर कथा वर्णन करूँ, दो बल, बुद्धि ज्ञान।।







शंकर जी की महानता



देवी देवताओं की कथाएँ इस जग में,
मन तन शांति सुख, नित्य हमें देती हैं।
श्रद्धा से स्वीकारें सब, पूजते है शिव को,
वह शिव शक्ति, निज प्यार हमें देती है।।

नित्य सत्कर्मों से, मिलती सफलता,
पाप कर्मों से मिले अन्ततः विफलता।
सतकर्मों को करें, मानें सदा शिव को,
कृपा होती वाकी, सुख भोगें सब सृष्टि का।।

शंकर महादेव, उनकी प्रसिद्ध अमरता,
भक्त तन पूजा करे, मन याद करता।
शंकर-शक्ति-चिन्ह जहाँ दीख पड़े जग में,
पूजा-दर्शनार्थ वहाँ, मेला नित्य भरता।।

अमर हैं वह, और अमर कहानी भी,
भक्ति मुक्ति के हित, चाहिए जो सुनानी भी,
मुक्ति के हितार्थ, यह चाहिए नित्य गानी भी,
पाप कर्मों से छूटे, सफल जीव जवानी भी।।

भौतिक तन धारण किया था जब शिव ने,
सदा सच्चे भक्तों को लाभ नित्य देते थे।








पाप पथ उनसे छुड़ाते वह प्रयत्न से,
सत्य पथ बढ़ने का लक्ष्य वह देते थे।।

जिनकी परख तीव्र, भक्ति में डूबी थी,
उनके समक्ष झुक, सामीप्य लाभ लेते थे।
पापी जो अभागे, नित्य रहे दूर उनसे,
होकर विरक्त, तन पाप भार ढोते थे।

अब जो समाये तुच्छ तन महा सृष्टि में,
कैलाश पर रहते थे, पलते सुख वृष्टि में।
उच्च था शिखर, वह उच्च सिद्ध देवों में,
मूल्य उनका था तब, अब भी है सृष्टि में।।

एक बार ऋषि नारद, गये उनसे मिलने,
जग के हितार्थ, शिव भक्ति में पलने।
सृष्टि व्याधियों को, ज्यों निवारण ही करने,
दुखी-भक्त प्रजा के भी, संकटों को हरने।।

नारद जी श्रद्धा से ही बढ़े चले जाते थे,
मन ही मन शंकरजी का, भक्ति गीत गाते थे।
बीहड़ था पथ, पर आशा भी अनूठी थी,
पर हित कर्म पर, नारद जी की दीठी थी।।











कैलाश पर्वत की अनुपम छटा

जिस पर्वत शंकर बसें, पावन प्रसिद्ध महान।
देख सुधि विसराय मन, क्योंकर हो गुनगान।।

नारद सोचे, अपने मन में, शंकर भोले रमते राम।
ब्रह्मा रहते ब्रह्मलोक में स्वर्ग लोक रहते भगवान।
इन्द्र रहते इन्द्रपुरी में, चन्द्रलोक में चन्द्र महान।
निज लोक निवासी सब, करते हैं। जग का कल्याण।।

शंकर जी हैं देव अनूठे, भक्तों का करते कल्याण।
सुख सुविधाएँ त्याग सृष्टि की, करते एकाकी विश्राम।
शक्ति हित तप करें निरन्तर लिप्त नित्य संयम संग्राम।
विषयवासना भस्मिभूत कर, तन पर भस्म लगाते राम।।

कुछ आगे और नारद, देखा छिटकी सुख राशि को।
तन मन की सुधि भूल गए, प्रणाम करें कैलाशी को।
घोर तपस्या के हित नित, प्रेरित करता संन्यासी को।
आदर्श सदा बनता उनका, शक्ति देता वनवासी को।।

भिन्न भिन्न प्रश्न उठे मन में, आशा का संचार हुआ।
देख शिखर की अनुपम शोभा, मन में हर्ष अपार हुआ।
शंकर शक्ति देख वनों में, भक्ति का विस्तार हुआ।
शंभू की अद्भूत माया का, निश्चित ज्ञान विचार हुआ।।

तन मन अनुशासित रहे, व्यापें भाव विरक्त।
लहें भक्ति का लाभ नित, बसें वनों में भक्त।।







शान्ति का साम्राजय यहाँ, व्यर्थ का विरोध नहीं।
मन नित विरक्त रहे, आकर्षण अवरोध नहीं।
त्याग होता जग का, यों आता यहाँ क्रोध नहीं।
तृष्णा का भाव लुप्त आता यहाँ लाभ नहीं।।

वन वस्तुओं की सीखे, पथ्य बन जाती हैं।
वन्य जन्तुओं की लारे, मन को लुभाती हैं।
छाया नित्य वास करे, धूप आती जाती है।
यहाँ तपी जन की तपस्या पूरी होती है।।

आगे बढ़ नारद ने देखा शीत गंगा की धारा को।
पुण्य सलिलनी मुक्ति दाता, अंपरम्पार अपारा को।
जिसका जल का प्रवाह तीव्र, शान्त सिक्त भाव से।
जाता जैसे संकट, हरने प्रकोप और प्रवाह से।।

प्रातः की थी बेला शुभ, सूर्य शुभ्र मुकुट सा।
उच्च शिखरों पर जैसे, बैठा हँस-हँस कर।
स्वागत में पंछियों के झुण्ड, गाना गाते थे।
कर्म का संदेश जैसे, देते हँस-हँसकर।।

विस्मय था जो अब तक, स्पष्ट हुआ उनका।
यहाँ का आदर्श जन लक्ष्य बन जाता है।
यहाँ के आकर्षण ने लुभाया देव शंकर को।
आता यहाँ तपने जो, यहीं रम जाता है।।











नारद जी की पार्वती से बातचीत

पता नहीं मानव मन में, कब अनायास हो परिवर्तन।
मनमोहक मूरत मानव की, पागल बन करता नर्तन।
मन का परिवर्तन मानव को, उसका मार्ग बताता है।
तुलसी मीरा बाल्मीकी को, जग में जाना जाता है।।

सदा सत्य, अनुभव सिद्ध, मन सुख हित जग भटका करता।
सुखी की आशा में नित्य, जीवन के कर्मो को करता।
आशा की स्मपूर्णता पर, सुख भार अति सहता रहता।।
आस विरोधी फल पर, दुख सहता मन, चिन्तित रहता।।

मन:स्थिति ही मानव के, सुख दुख का निर्णय करती।
सम रस भाव जिसमें व्यापें, सुख से नैया उसकी तरती।
संतोष अति बलवान सदा, दुख में भी सुख मिल जाता है।
काँटों की पीड़ा सहे पुष्प, सहे पुष्प, सहर्ष वहीं खिल जाता है।

परम सुखी, शंकर रहते थे, उच्च शिखर पर वन में।
जग के हित पावन गंगा, बहती थी ज्यों उनके मन में।
आदर्श तपस्या ही उनकी, सुख देती नित भक्तन तन में।
सिद्ध तपस्वी ही जान सकें, कितना सुख है निर्जन वन में।।

जिस थल शंकर बसें, चाहें तो रच दें सोने से।
परन्तु रावण अभिमान प्रसिद्ध, सोने की लंका होने से।
जीवन का सच्चा सुखा समझे, क्या सिद्धि पाने खाने से।
आत्म-सुखी थे महादेव, त्यागी संतोषी होने से।।







सुख-सुविधाएँ मिलें हमें, सतकर्मों के अपनाने से।
पंचभूत का भार अति, बचना चाहते मर जाने से।
सारे प्रयास निरर्थक हों, इनके यहीं पर रह जाने से।
तन का भी भार नहीं उठता कुछ व्याधि के हो जाने से।।

सद्यत्न करें ऐसे मिलकर, तन मन में कोई रोग न हो।
एकाकी शुभ चिंतन के संग, घातक बैर विरोध न हो।
परहित त्याग भावना पनपे, मृग तृष्णा चिनता लोभ न हो।
परम सुखी जीवन सबका हो धरती का आँचल नरक न हो।।

इन्ही भावों में प्रेरित हो, निज लोक बसाया शंकर ने।
अपने भक्तों की इच्छा से, इस हित उकसाया शंकर ने।
दुष्ट जनों का त्रास दिए, रूद्र दिखाया शंकर ने।
भक्तों को पाला सुख से और पापी मरवाया शंकर ने।।

झूठे आकर्षण को त्यागा इच्छित शंकर ने।
प्रकृति की सुलभ देने में, मन समझाया शंकर ने।
तन की शक्ति सुख कारण, तन भस्म रमाया शंकर ने।
जग से पाप पराजय हित, उसको संहारा शंकर ने।।

चहुँ ओर विराजे उच्च शिखर, ज्यों दृढ़ दुर्ग की दीवारें।
उन पर शोभित थे हरे वृक्ष करते सुख की बौछारें।
आते जाते मनहर पंछी, काली कोयल की पुकारें।
स्वतंत्र विचरते पशु दल थे, संगीत मस्त थे वहाँ सारे।।

नारद जी ने दौड़ कर किया गृह प्रवेश।
देखा पार्वती भक्तों को, करती थी उपदेश।।







नारद जी भगवान शंकर के अनुपम गुणों का गान करते हुए उनके निवास स्थान पर पहँचे। उन्होनें महादेव जी के दर्शन एवं अभिवादन की इच्छा से

अपनी दृष्टि उस निवास में चारों ओर दौड़ाई परन्तु महादेव जी के दर्शन नहीं हुए।

पार्वती जी नित्य कार्यक्रम के अनुसार भक्तों की सभा में बैठी उन्हें सदुपदेश दे रही थीं। उस सम्पूर्ण शिव लोक में श्रद्धा, विश्वास एवं शान्ति का साम्राज्य था। नारद जी को ऐसा प्रतीत हुआ कि भक्त और माता पार्वती सभी ज्ञान की अपार गंगा में उदार चित से डुबकी लगा रहे है।

माता पार्वती अपने भक्ति भावों के प्रवाह में पूर्णतय अनुरक्त थीं। नारद जी के गृह में प्रवेश कर जाने एवं उनकी ओर निरन्तर ध्यान लगाये रहने पर भी उनका ध्यान नारद जी की ओर नहीं गया और वह एकाग्र चित से उपदेश देती रहीं। ऐसी स्थिती में नारद जी पार्वती के समीप जाकर उनकी इस प्रकार से स्तुति करने लगे.....

माता जी इस दास का नमन करो स्वीकार।
दीन भक्त विनती करें, करो दया उपकार।
महादेव महाराज के, दर्शन का धर ध्यान।
दर पर दीन उपस्थित, माता करो कल्याण।








नारद जी की प्रार्थना

हरी गयी तन मन की पीर, मात तेरे दर्शन से।
खुली भक्तों की तकदीर, मात तेरे दर्शन से।।

चन्द्र सा मुख सिर मुकुट विराजे, अंग-अंग आभूषण साजे।
मेरा जीवित हुआ शरीर, मात तेरे दर्शन से।।
लाल चुनरिया आढ़े तन पर, विचरण करता शक्ति सिंह पर।
आयी दुखिया मन को धीर, मात तेरे दर्शन से।।
शक्ति की साक्षात प्रतिमा, भक्त भय हरती प्रवीना।
नयी आशा का संचार, माता तेरे दर्शन से।।
तुम चाहे जैसे रख सकती हो, जो चाहो सो कर सकती हो।
होवे भक्तों का कल्याण, मात तेरे दर्शन से।।

नारद जी की विनय पूर्ण मधूर वाणी एवं वीण को सुनकर पार्वती जी उनकी श्रद्धा भावना से अत्यधिक प्रभावित हुई और प्रसन्नचित होकर नारद जी से इस प्रकार कहने लगी.....

हे मुनिवर ! आप महाज्ञानी हो। भक्ति रस में डूबे श्रद्धालु भक्तों में कल्याण के लिए आप निरन्तर चिन्तित रहते हो तथा उनकी भवबन्धन से मुक्ति के लिए अथक प्रयास करना आपने अपनों धर्म मान रखा है। आपकी इस परहित एवं कल्याणमयी मधुर भावना से प्रभावित होकर ही शंकर महाराज आपका सभी मुनियों से अधिक आदर करते हैं और साथ ही आपके आगमन की निन्तर प्रतीक्षा किया करते हैं। आप शंकर जी के सभी भक्तों एवं भूलोक वासी ऋषिजनों में परम आदरणीय हो। मैं स्वयं भी आपके कल्याण की सदा कामना








किया करती हूँ। आपका उत्तम यश संसार में फैला है और संसार के सभी मनुष्य आपका आदर करते हैं। आपकी शंकर भक्ति, जगत कल्याणमयी भावनायें, लोक भ्रमण की इच्छा एवं भक्तों की मनः व्यथा को जानकर उसको दूर करने का प्रयास आदि आपके सभी काम सराहनीय हैं।

इतना कहकर पार्वती जी नारद जी के मुख मंडल पर उदित भावों को गम्भीरता पूर्वक निहारने लगीं। उनके लिए नारद के अन्तर्मन के भावों का ज्ञान प्राप्त करना सुलभ था। उन्होंने नारद जी से पुनः कहा–हे मुनिशिरोमणि नारद जी! मैं जानती हूँ कि आपका इस लोक में आना विशेष अर्थ रखता है। आपको अपने श्रद्धेय भगवान शंकर के दर्शनों की अभिलाषा है। भू लोक में भ्रमण करते हुए अपने अनेक दीन-दुखियों के हृदय विदारक कष्टों को देखा होगा आपने आपनी तीक्ष्ण बुद्धि से वेदों की आज्ञा के आधार पर अनेकानेक समस्याओं का समाधान भी कर दिया होगा। परन्तु ऐसी विषम समस्यायें, जिनका निराकरण साधारण मानवी बुद्धि से संभव नहीं है, आपके समक्ष शेष रही होगी, जिनके लिए आपको भगवान शंकर जी से विचार विर्मश जरूरी है। ऐसी परिस्थितियों में आप सदा भगवान शंकर के शुभ परामर्श को प्राप्त कर भक्तों का कल्याण किया करते हैं।

अपने मन की बात माता पार्वती जी के मुख से सुनकर नारद जी को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह पार्वती के ज्ञान की प्रशंसा में कुछ शब्द कहना चाहते थे। परन्तु माता पार्वती ने फिर से संबोधित करते हुए कहा–

हे नारद जी! आपकी इन सभी शुभ भावनाओं का संसार के







सभी मनुष्य, ऋषिगण, देवी-देवतागण और यहाँ तक कि राक्षस भी आदर करते हैं परन्तु संयोग की बात यह है कि शंकर भगवान अपनी लोक यात्रा से लौटकर तपस्या हेतु एक अन्य स्थान पर विराजमान है।

आप जानते हैं कि भगवान शंकर की समाधि जगत प्रसिद्ध है और उनका तप तथा मौन शीघ्र समाप्त होना असंभव है। अतः शंकर जी से शीघ्र मिलने की आशा आपको कुछ समय के लिए त्यागनी पड़ेगी।

हे भक्त-श्रृंगार नारद जी! मैं आप से पूर्ण विश्वास के साथ यह आशा करती हूँ कि आप भगवान शंकर जी के इस लोक में पधारने तक यहीं विश्राम करें, जगतपिता शम्भु और उनके भक्तों की प्रसन्नता के निमित्त शंकर जी की अनुपम महिमा का विस्तृत व सारगर्भित गुणगान करें जिससे आपके कल्याण कारी ज्ञानोपदेश का लाभ सम्पूर्ण लोक के बुद्धिमान प्राणियों को प्राप्त हो सके।

नारद जी ने माता पार्वती के पावन परामर्श को सुना। वह उनके सदुपदेश का स्वागत कर अपना विचार उनके सामने प्रस्तुत करना चाहते थे। परन्तु अन्तस्थल में पूर्वनिहित पार्वती जी की भक्ति भावना के कारण उदित विचारों के प्रवाह ने उनका कंठ अवरूद्ध कर दिया। वह पार्वती के सामने नतमस्तक होकर रह गये। उनके शरीर में प्रेम भावातिरेक के कारण रोमांच हो आया।

जग प्रसिद्ध ज्ञानी मुनि नारद की ऐसी स्थिति एवं भक्ति-भावमयी आतुरता और शंकर शक्ति-भक्ति का उन पर अगाध प्रभाव देखकर वहाँ पर उपस्थित भक्तगणों के विस्मय की सीमा न रही। वे सभी मिल कर शंकर भगवान, माता पार्वती और नारद जी का जय-जयकार करने लगे।







इधर नारद जी की शंकर भगवान के चरण कमलों में अपार श्रद्धा भक्ति, हर्षोल्लास एवं प्रेम प्रदर्शन की उत्कट इच्छा से ओतप्रोत भाव उनके भक्ति गीत में फूट पड़े। उन्होने समीप से रखी अपनी वीणा को उत्सुकता से अपने कर कमलों में उठाकर उसके तारो को झंकृत करना आरम्भ कर दिया। उनकी मन-भावनी परम प्रिय वीणा की मधुर धुन के साथ उनकी रसभरी वाणी उपस्थित भक्तों को सुख देने लगी...

परिभ्रमण कर सृष्टि का, पहुँचा शंकर लोक।
पार्वती शंकर शक्ति का, देखा व्याप्त आलोक।।

परिचित सब प्रभाव से, रटें शंभु का नाम।
नाम जाप अवलम्ब से, होता जग कल्याण।।

भवसागर बीच फंसी नैया, भक्तन रखवारे शीघ्र उबारों।
उर अन्तर ध्यान धरे सगरे, तुम सिद्ध निपुण हो रखबारे।।

सदा सुखी, स्वतन्त्र विचरते, संतों के संकट को हरते।
प्रेम करें जन सहज उतरते, भक्तन के तुम प्राण प्यारे।।

तन पर पावन भस्म रमाते, ज्ञान की गंगा नित्य बहाते।
भक्त जो डूबे, सो तर जाते, तन दाता तुम राखनहारे।
स्वाभिमानी का तुमसम्मान करो, पापी अभिमान तुरन्त हरो।।
नारद अभिशाप महान हरो, प्रभु सब जग का कल्याण करो।।

नारद की रसमयी वाणी के मधूर भक्ति गीत एवं वीणा की सुखदायी सुरीली तान ने शिव लोक के प्रणियों को विभोर कर दिया। सुख का समय बीतते देर नहीं लगती। पूरा दिन बीत गया और सूर्य







अस्तांचल की ओर जाता हुआ रात्रि के आगमन का शुभ संदेश देने लगा। इस प्रकार शंकर भक्ति-रस का सुखमय भार मन-तन पर स्वेच्छा से वहन करते हुए सभी भक्तगण अपने-अपने निवास स्थान को चल गये।

शंकरजी के गले में मुडमाला क्यों?

माता पार्वती के कहे अनुसार नारद जी उसी सुरम्य, मनोहर और प्रकृति के आभूषणों से मंडित स्थान में रहकर शंकर भगवान के आने की प्रतीक्षा करने लगे। बहुत समय बीत जाने पर भी शंकर जी नहीं आये। तो नारद जी की पुनः लोक भ्रमण की इच्छा प्रबल होने लगी और वह माता पार्वती से इस प्रकार प्रार्थना करने लगे:-

श्रद्धेय माता जी, महादेव जी की प्रतीक्षा करते हुए बहुत समय व्यतीत हो गया परन्तु वह नहीं आये। आप जानती हैं कि उनकी तपस्या और समाधि के समय का पूर्वानुमान लगाना कठिन है। अतः आप मुझे पुनः भ्रमण करने की स्वीकृति दें। मैं दुबारा शीघ्र ही महादेव जी के दर्शन करने आऊंगाँ।

नारद जी ने अपना अनुरोध बन्द नहीं किया और बोले- महादेव जी की कृपा पर आधारित इस सम्पूर्ण सृष्टि के प्राणी जिनकी आराधना करते हैं, उनके दर्शन लाभ करने की मेरी इच्छा निरंतर बनी रहती है। सत्य तो यह है कि मैं श्री महादेव के अलौकिक रूप की प्रतिपल पूजा करता हूँ। लेकिन प्रश्न है जो मेरे मन को निन्तर अशांत







किए रहता है जिसके समाधान हेतु में महादेव जी से बातचीत करना चाहता था। मैं समझता हूँ कि आप भी मेरे प्रश्न का निवारण करने में पूर्ण समर्थ हैं। आप ही बताएँ कि "भगवान शंकर अपने गले में मुण्डमाला क्यों पहनते हैं?"

नारद जी के प्रश्न को सुनकर माता पार्वती जी विस्मित भाव से बोली–नारद जी, मैं भी इसका कारण नहीं जानती। इस प्रकार का प्रश्न तो मैंने शंकर महाराज से कभी नहीं पूछा। वह भी यह भेद न जाने क्यों मुझसे छिपाए हुए हैं। मैं उनके इस लोक में वापिस आने पर उनसे मुण्डमाला धारण करने का कारण अवश्य ज्ञात करूँगी। नारद जी ने इस प्रश्न को शंकर जी से पूछने का पुनः अनुरोध किया और माता पार्वती की स्वीकृति लेकर वह लोक भ्रमण के लिए चले गये।

पर्याप्त समय व्यतीत हो जाने पर भगवान शंकर की समाधि सम्पन्न हुई और वें कैलाश पर्वत प्रर स्थित अपने निवास स्थान की ओर चल पड़े। आशा से अधिक समय व्यतीत हो जाने के कारण माता पार्वती एवं शिव लोक के अन्य निवासी, भगवान शंकर के लौटने की बड़ी उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे थे। अनायास ही तपस्या, शक्ति और शान्ति–क्रोध के प्रतिरूप भगवान ने निज लोक में प्रवेश किया। उनको देखकर श्रद्धालु भक्तों तथा उस लोक कें वासी सभी प्राणियों को जो सुखानुभूति हुई उसका वर्णन नहीं किया जा सकता।

अपने प्राणनाथ भगवान शंकर जी कें दर्शन कर, उदास माता पार्वती का हृदय कमल भी खिल गया। उन्होने शिवजी महाराज की विभिन्न प्रकार से आरती और सेवा–सुश्रुवा की। अधिक दिनों के







पश्चात् तथा विशिष्ट प्रकार की सेवा भावना के प्रदर्शन के कारण महादेव भी अति प्रसन्न हुए। भगवान शंकर जब प्रसन्न होते हैं तो संतो और भक्तों के संकट समाप्त हो जाते हैं।

माता पार्वती भगवान शंकर के मनोहर रूप को अपलक निहारती रहीं। इसी बीच उनकी दृष्टि उनके नीलकंठ पर सुशोभित मुण्डमाला पर पड़ी। तो नारद जी का पूछा हुआ प्रश्न सजीव हो उठा। उन्होंने शंकर जी से इस प्रकार विनय की-

हे प्राणनाथ, आप अपने भक्तों की सभी आशाएँ पूर्ण किया करते हैं। आप ये भी जानते हैं। कि मैं आपकी चिरसंगिनी होने के साथ-साथ आपकी भक्त भी हूँ और आपके रहते या आपकी अनुपस्थिति में भी आपकी पावन स्मृति में डूबकर निरन्तर अन्तर्मन से पूजा किया करती हूँ और मेरे मन के प्रत्येक प्रश्न का निवारण करने में आप समर्थ हैं।

"हे नाथ, मैं ये जानना चाहती हूँ कि आप अपने गले में मुण्डमाला क्यों धारण करते हैं?"

पार्वती जी के मनोहर मुख से ऐसे प्रश्न का सुनकर शंकर जी पर विस्मय का भाव निखर आया। ऐसा प्रश्न पार्वती ने पहले कभी नहीं पूछा था और जिसके उत्तर को भी वह पार्वती को बताना उचित नहीं समझते थे।

भगवान शंकर मानों पार्वती के मन को समझाने की युक्ति सोच रहे थे। लेकिन बीच में ही पार्वती ने ये कहकर ध्यान भंग किया-

हे सर्वेश्वर, आप शान्त क्यों हैं? क्या मेरा अनुरोध आपको







स्वीकार नहीं है? मेरा प्रश्न आपके लिए इतना कठिन तो नहीं है क्योकि आप सर्वज्ञ हैं।

पार्वती की पुनः प्रार्थना पर शंकर जी मानो इच्छा के विरूद्ध भी बोलने के लिए बाध्य हो गए और उन्होंने पार्वती को इस प्रकार समझाना प्रारम्भ कर दिया।

हे पार्वती! उपरोक्त प्रश्न के उत्तर का ज्ञान आपके हित में नहीं है। मै चाहता हूँ कि इस विषय पर हठ धारण न करके आप शान्तिपूर्वक लोकआनन्द की सुमधुरता में विचरण करें।

शंकर जी के बार-बार समझाने पर भी पार्वती की उत्तर जानने की लालसा अधिक पुष्ट होती गई और उन्होंने इस प्रकार के नाटकीय हाव-भाव् हठपूर्वक व्यक्त किए कि शंकर जी उत्तर देने के लिए जैसे विवश हो गए। भगवान शंकर ने पार्वती के प्रश्न का उत्तर देना प्रारम्भ कर दिया।

"हे पार्वती, मेरे द्वारा रूण्डमाला पहने जाने का कारण बड़ा रहस्यमय है। आप जितने रूण्ड (मुण्ड) मेरी इस कण्ठमाला में देख रही हो उतनी ही बार तुम्हारा जन्म हुआ है और तुम्हारे प्रत्येक जीवन की समाप्ति पर मैंने तुम्हारे रूण्ड को क्रमशः माला के रूप में धारण किया है।"

भगवान शंकर के मुख से परमगूढ़ रहस्य को जानकर पार्वती आश्चर्य चकित रह गई। वह मन्त्र मुग्ध होकर बोल उठीं-हे प्रभो, आपको मेरे प्रत्येक जीवन के हर एक कार्यकलाप, जीवन-मरण आदि का सम्पूर्ण ज्ञान है? क्या आप अमर हैं? और मैं मरती पैदा होती रही







हूँ? आपने अपनी अमरता का कारण सदैव मुझसे छुपाये रखा जो शायद आपके गूढ़ ज्ञानानुसार उचित ही होगा। परन्तु इस रहस्य की जानकारी पर मेरी यह जानने की भी इच्छा है कि आपकी इस शाश्वत अमरता का क्या कारण है? आप कृपा करके इस तथ्य के ज्ञान का दान भी देने की कृपा करें।

पार्वती के हठीले स्वभाव से शंकर जी परिचित थे। उनको इस तथ्य का कारण पूर्वानुमान था कि पार्वती की प्रश्नोतर के बिना तृप्ति होना किसी भाँति भी सम्भव नहीं है। अतः उन्होंने अपनी अमरता कारण बताना प्रारम्भ किया।

"हे पार्वती! एक कथा है, जिसको सुनने वाला व्यक्ति अमर हो जाता है। मैंने उस अमर कथा को सुना है। उस पर चितन कर लोक कल्याण के अनेक कार्यों को सम्पन्न किया। अमर कथा भगवान सदाशिव की अनेक लीलाओं-कार्यों-कलापों की एक अविस्मरणीय कहानी है। मैं उस अमर कथा को सुनने मात्र से ही अमर हूँ।"

भगवान शंकर की अमरता का कारण जानकर पार्वती ने कहा-भगवन् मैं भी जन्म-मरण के दुखदायी बन्धन से मुक्ति प्राप्त करना चाहती हूँ। आप कृपा करके उस अमरत्वदाता अमर कथा का सम्पूर्ण प्रसंग मुझे भी सुना दीजिए। जिससे आपकी समीपता एवं भक्ति का मुझे भी लाभप्राप्त हो और आपके चरण कमलों में निरन्तर रहकर मैं आपकी सेवा कर सकूँ।

भगवान शंकर को पार्वती का यह अनुरोध इच्छा के विरूद्ध भी स्वीकार करना पड़ा।









शुकदेव के जन्म की कथा



पंचभौतिक प्रपंच के इस जीवन में नवीनता का संचार करने के लिए जगतपिता ने इसे परिवर्तनशील बनाया है। परिवर्तन के परिणामस्वरूप जीवित प्राणियों की पूर्व स्मृति का सर्वथा लोप हो जाता है। जगतपिता पारब्रह्म की भावना के आदर के आशय से शिवजी अमरकथा को अन्य किसी संसारिक प्राणी को सुनाना नहीं चहाते थे। परन्तु अपनी अर्धांगिनी पार्वती का अनुरोध भी उन्हें पूरा करना था।

अतः माता पार्वती और भगवान शंकर दोनों कैलाश पर्वत की एक बड़ी एकांत गुफा में चले गए जिसमें किसी प्राणी के निवास की सम्भावना नहीं थी। क्योंकि अमरकथा एक महत्त्वपूर्ण प्रसंग था। उसकी गोपनीयता बनाए रखने तथा केवल पार्वती तक सीमित रखने के उद्देश्य से भगवान शंकर ने मृगछाला पर विराज कर अपने कालाग्नि रूद्र नामक गण को प्रकट किया तथा उसे आदेश दिया-"हे रूद्र, इस गुफा तथा इसके आस-पास के स्थानों के समस्त जीवधारी प्राणियों को अपनी प्रज्वलित अग्नि के प्रभाव से तुरन्त भस्म कर डालो।"

गण ने आदेश का पालन किया और कुछ ही क्षणों में उस स्थान के समस्त जीवधारियों को समाप्त कर दिया।

भगवान शंकर जिस मृगछाला पर विराजमान थे, उसके नीचे पड़े एक तोते के अंडे पर कालाग्नि का प्रभाव न हो सका। क्योंकि उस समय तक वह जीवधारी नहीं था। निश्चित विधानानुसार समय पाकर तोते के अंडे से तोते का जन्म हुआ। जिसके विषय में स्वयं भगवान शंकर भी न जान सके क्योंकि कालाग्नि के प्रभाव के पश्चात








उस स्थान पर किसी अन्य जीवधारी की उपस्थिति का संदेह निश्चित रूप से समाप्त हो गया था।

अमरेशनाथ ने अमरकंथा जब कही, सुनी थी पार्वती।
उत्ताराखण्ड में लगा आसन बैठे कैलाशपति।।
अविनाशी कैलाशी काशी उत्तराखण्ड में बसाई।
बैठ गुफा में गौरी को अमर कथा जब सुनाई।।
अमृत वाणी सुनी उमा के नेत्र में निद्रा भरि आई।
वही कथा फिर एक तोते के बच्चे ने सुनि पाई।।
दिया हुँकारा शिवजी को शिव कहें अर्थ कर समुझाई।
सुआ सुनता था, और वहीं सोती थीं गौरा माई।।
पारब्रह्म का खेल हुआ पर उस तोते की बढ़ी रती।
उत्ताराखण्ड में लगा आसन बैठे कैलाशपति।।
हुई कथा सम्पूर्ण शिव ने पार्वती को बुलाया।
उठी गौरजाँ कहे शिव मैने कुछ नहीं सुनपाया।
फिर शिवजी ने कहा हुँकारा किसने मुझको सुनाया।
और तीसरा यहाँ पर कौन विधि करके आया।।
चढ़ा क्रोध शिव शंकर को कर से त्रिशूल को उठाया।
उसी वक्त फिर वह तोते का बच्चा उठके धाया।।
दौड़े शिव उसके पीछे वह निकल गया कर सुमतमती।
उत्ताराखण्ड में लगा आसन बैठे कैलाशपति।।
तीनलोक में उड़ा व तोता कहीं मिला नहीं ठिकाना।
उड़ते-उड़ते बहुत सा अपने मन में घबड़ाना।।







पतिव्रता थी खाड़ी करे स्नान उसी को पहिचाना।
दौड़ के तोता जाय फिर उसके मुख में समाना।।
वहाँ किसी का जोर चले नहीं क्योंकर हो उसका पाना।
फिर शिवजी ने दिया वरदान कहा ये है स्याना।।
वही हुए शुकदेव व्यास के पुत्र बड़े भये यती सती।
उत्तराखण्ड में लगा आसन बैठे कैलाशपति।।
अमरकथा का बड़ा महातम है जो कोई सुनने पावे।
श्रवण किए से होय वह अमर नहीं मरने पावे।।
चार वेद षट्शास्त्र अठारह पुराण सब इसमें आवें।
अमर कथा को आप शुकदेव सदा मुख से गावें।।
वह पंडित हैं बड़े कि जो कोई अमरकथा को सुनावें।
और दूसरे बोल नहीं कछु मेरे मन में भावें।।
उसी दिन शिव ने कही थी कौन बार तिथि कौन हती।
उत्तराखण्ड में लगा आसन बैठे कैलाशपति।।

भगवान शंकर नेत्र मूंद कर अमर कथा सुनाने लगे। शान्त भाव से कही जा रही अमर कथा को पार्वती तथा तोता दोनों सुन रहे थे। अमर कथा के प्रत्येक वाक्य सुनने पर हुँकारा कुछ समय तक तो माता पार्वती देती रहीं। दैव योग से पार्वती को निद्रा ने घेर लिया और वह अचेत होकर सो गयीं। भगवान शंकर कथा कहते समय ध्यान मग्न थे और उन्होंने पार्वती के सो जाने पर ध्यान नहीं दिया।

गुफा में छिपकर अमर कथा को सुनने वाला तोता मानों पार्वती के सो जाने की ही प्रतीक्षा कर रहा था। पार्वती के सो जाने के तुरन्त







बाद उसने शंकर महाराज द्वारा कहे गई अमर कथा के प्रत्येक वाक्य के अन्त में हुँकारा देना प्रारम्भ कर दिया। और अमर कथा के अन्तिम वाक्य तक वह हुँकारा देता रहा। अमर कथा के पूर्ण होने पर भगवान शंकर का ध्यान भंग हुआ, उन्होंने देखा पार्वती जी की आँखें बन्द हैं और वह सो रही हैं। शंकर जी के उठाने पर पार्वती निद्रा से जागीं। शंकर जी ने कहा-पार्वती! तुम्हारी इच्छानुसार यह सम्पूर्ण अमर कथा मैंने सुनायी। क्या तुमने इस अमर कथा को पूरे ध्यान से सुना है?

पार्वती ने आश्चर्य चकित होकर उत्तर दिया-महाराज, मैं तो सो गई थी। मैंने अमर कथा का कुछ भाग अवश्य सुना है। मैंने सम्पूर्ण कथा नहीं सुनी। क्या अमर कथा वास्तव में पूर्ण हो गई?

पार्वती से यह वचन सुनकर शंकर भगवान के आश्चर्य की सीमा न रही। उन्होंने पूछा-अमर कथा के अन्तिम वाक्य तक हुँकारा देने वाला कौन था? पार्वती ने उत्तर दिया-

"प्रभो, मैं नहीं जानती।"

पार्वती के मुख ऐसे वचन सुनकर शंकरजी को निश्चय हो गया कि सम्पूर्ण अमर कथा पार्वती के अलावा किसी अन्य प्राणी ने सुनी है। जो यहीं कहीं पास में छुपा हुआ है। ऐसा जानकर भगवान शंकर आग बबूला हो उठे। उन्होंने अपना त्रिशूल उठाया और अमर कथा सुनने वाले प्राणी का अन्त करने का प्रण किया।

भगवान शंकर के क्रोधित रूप एवं कठिन प्रण को देख तोते का मन मृत्यु के भय से काँप उठा तथा वह अपने प्राण रक्षा की आशा से गुफा से निकल कर अति वेग से उड़ने लगा। भगवान शंकर







ने तोते को उड़ता देखा तो जाना कि इसी तोते ने अमर कथा को सुना है और उसको मारने के लिए वह उसके पीछे-पीछे भागने लगे।

भगवान शंकर के शत्रु को कौन शरन देता? उनकी क्रोधाग्नि को कौन सहन करता? अतः तोता लगातार उड़ता ही जाता था तो संयोगवश भय से व्याकुल तोते की दृष्टि व्यासदेव की पत्नी पर पड़ी। वह अपने घर के आगँन में बैठी जँभाई ले रही थी कि मृत्यु के बचाव को कोई उपाय न पाकर तोता उसके मुँह के रास्ते उनके पेट मे प्रवेश कर गया। भगवान शंकर भागते हुए व्यासदेव के द्वार पर आए और उन्होंने व्यासदेव से इस प्रकार कहा-"व्यासदेव तुम्हारे घर में मेरा चोर है। उसे उपस्थित करो।"

व्यासदेव ने किसी मनुष्य को अपने घर में जाता नहीं देखा था अतः उन्होंने मना करते हुए कहा-महादेव जी आप विश्वास करें मेरे घर में कोई चोर नहीं है, मैं बहुत देर से अपने घर पर ही हूँ यदि विश्वास नहीं है तो आप मेरा घर देख सकते हैं, वैसे तो आपसे कुछ भी छुपा नहीं है।

शंकर जी ने गुस्से से फिर अपनी बात दोहराई। भगवान शंकर की गर्जना सुनकर व्यासदेव की पत्नी भी द्वार पर आ गई और बोलीं-हे महाप्रभो, थोड़ी देर पूर्व जँभाई लेते समय मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मेरे मुख में से एक तोता मेरे अन्दर प्रवेश कर गया है। तब व्यासदेव जी ने पुनः प्रार्थना की-

हे कृपालु महादेव, वास्तविकता का ज्ञान न होने के कारण ही मैंने आपको उपरोक्त उत्तर दिया था। यदि वह तोता ही आपका चोर







है तो आप उचित निर्णय ले सकते हैं। आप यह भी जानते हैं कि स्त्री को मारना पाप है।

व्यासदेव की बात सुनकर तथा तोते की मृत्यु से पूर्व व्यासदेव की पत्नी की मृत्यु की निश्चितता को विचार कर भगवान शंकर के मन में दया आई और वह निरूत्तर हो गए। किसी भी सुलभ विकल्प के अभाव में विवश होकर वह कैलाश पर्वत पर चले गये।

अमर कथा को सुनकर तोता अमर हो गया। वह चारों वेदों और अठारहों पुराणों का ज्ञानी हो गया था। अमरता का शाश्वत गुण ग्रहण कर तोता व्यासदेव की पत्नी के पेट में कई वर्ष तक रहा जिससे उनकी उदर पीड़ा में वृद्धि होती गई। अपनी पत्नी को महापीड़ा से व्यथित देखकर व्यासदेव ब्रह्मा के पास गए। ब्रह्माजी ने समस्या के उचित समाधान हेतु विष्णु भगवान से परामर्श करने को प्ररित किया। फिर व्यासदेव तथा ब्रह्मा मिलकर विष्णु भगवान के पास गए। विष्णु भगवान ने शंकर जी से मिलने के लिए कहा। तब तीनों मिलकर शंकर जी के निवास स्थान पर आए और इस प्रकार निवेदन करने लगे-

हे महादेव, आप जानते हैं कि आपसे अमर कथा को सुनकर तोता अमर हो गया। वह व्यासदेव की पत्नी के पेट में रहकर उनकी पीड़ का कारण बन रहा है। कई वर्ष बीत गए उसने जन्म नहीं लिया। आप उसके जन्म का सरल उपाय बताने में पूर्ण समर्थ हैं।

शंकर जी ने अनुरोध स्वीकार कर लिया। शंकर जी उनके साथ मिलकर व्यासदेव के घर आ गए और तीनों देवताओं तथा स्वयं व्यासदेव ने मिलकर तोते से जन्म लेने का आग्रह किया तथा अनेक प्रकार से उसकी स्तुति की। तोता अमर कथा के श्रवण से अमर होने







के साथ-साथ ज्ञानवान भी हो गया था। देवताओं की प्रार्थना सुनकर वह गर्भ से ही इस प्रकार कहने लगा-

"हे देवताओं, संसार के सभी प्राणी मोह बन्धन से पीड़ित हैं। जब तक सभी निर्मोही नहीं हो जाते तब तक मैं जन्म नहीं लूँगा।

तोते की शर्त सुनकर समर्थ विष्णु भगवान ने अपनी अपार शक्ति के प्रभाव से समस्त प्राणियों को निर्मोही कर दिया। संसार के समस्त प्राणियों की निर्मोही स्थिति को सुनिश्चित कर तोते ने मानव का शरीर धारण कर जन्म लिया।

वेद व्यासदेव की पत्नी से पैदा हुए इस नवजात शिश का नाम-**"शुकदेव"** रखा गया। जन्म के तुरन्त पश्चात् ही उनके पंच भौतिक शरीर में अमरत्व गुण के कारण असाधारण वृद्धि हुई। वह तुरन्त ही घर त्याग कर चल दिए और निर्मोही होने कारण माता-पिता के प्रेम ने भी उन्हें नहीं रोका। शुकदेव के घर से चले जाने के पश्चात् भगवान विष्णु ने संसार से अपनी माया को हटा लिया और वह पुनः पूर्व की भाँति समोह हो गया।

संसार के समोह हो जाने पर एवं अपने प्यारे पुत्र शुकदेव के घर से चले जाने के कारण उसके माता-पिता पुत्र प्रेम के कारण विकल हो उठें। व्यासदेव शुकदेव को घर लाने की आशा से उनसे जाकर निर्जन वन में मिले और उन्होंने शुकदेव को कहा-

"हे वत्स, मैं तुम्हारा पिता हूँ। तुम्हें घर ले जाने की आशा से यहाँ आया हूँ। तुम्हारे घर से आ जाने के कारण तुम्हारी माता जी अत्यन्त दुःखी हो रही हैं। अतः तुम घर चलो।"







व्यासदेव के यह वचन सुनकर शुकदेव ने सादर विनय की-"हे श्रद्धेय तात, संसार निर्मोही है। यहाँ कोई न किसी का पिता है, न पुत्र है संसार के सभी सम्बन्ध निःसार हैं। अतः आप धैर्य धारण कर अपने घर वापस जाओ।"

विरक्त भाव से शुकदेव के मुख से ऐसे वचन सुनकर व्यासदेव बोले-"हे वत्स, संसार निर्मोही नहीं है। आपको भ्रम हो गया है। मोह बन्धन से मुक्ति प्राप्त करना सांसारिक प्रणियों के लिए सहज ही सम्भव नहीं है। आपको मेरी बात पर विश्वास करके घर चलना चाहिए।

शुकदेव को व्यासदेव के इन शब्दों से ज्ञात हुआ कि विष्णु भगवान् ने अपनी माया संसार से हटाकर उसे पुनः मोहयुक्त कर दिया है। अतः उन्होंने व्यासदेव को इस प्रकार धैर्य देते हुए कहा-

"हे पूज्य पिताजी मैं सद्गुरू की खोज में घर से निकला हूँ। जब तक सद्गुरू ग्रहण नहीं करता तब तक घर वापिस नहीं जाऊंगा। सद्गुरू से शिक्षा-दीक्षा प्राप्त कर मैं घर वापस आऊँगा और आपकी सेवा करूँगा।

शुकदेव की मानसिक स्थिति का अनुमान लगाकर एवं उनके प्रण का ज्ञान कर व्यासदेव अपने घर वापस आ गए।







शुकदेव जी का राजा जनक को गुरू धारण करना

शुकदेव जी ज्ञानी गुरू की खोज मे चल पड़े परन्तु अपने से बढ़कर ज्ञानी इन्हें कहीं भी नहीं मिला। अंत में पिता वेदव्यास क निर्देश एवं परामर्श से वह राजा जनक के पास मिथिलापुरी में गए। राजा जनक समस्त सांसारिक सुखों को भोग कर रहे थे। उन्हें सांसारिक माया-मोह में लिप्त देखकर शुकदेव में राजा जनक के प्रति बड़ी घृणा के भाव उभर आये। उन्हें विश्वास नहीं हुआ कि राजा जनक उचित मार्ग दर्शन करा सकेंगे अथवा राजा जनक उनके आदर्श गुरू बन सकते हैं। राजा जनक महाज्ञानी सिद्ध पुरूष थे। उन्होंने अपने प्रति शुकदेव के घृणित भावों को उनकी मुखाकृति पर उचित भावों के क्रम से जान लिया। अपने प्रति निराधार सन्देह का निवारण करने के लिए विदेह राजा जनक ने अपनी सिद्धि बल पर अपनी रमणीय नगरी में अग्नि प्रज्जवलित कर दी। और उसमें भयंकर आग की लपटें उठने लगीं। राजमहल के साथ-साथ सारा नगर भस्मिभूत होता देखकर महाराज जनक और उनकी पत्नी का चित पूर्णतया शान्त रहा तुरन्त ऐसे आकस्मिक भयंकर अग्निकाण्ड के प्रकोप के कारण शुकदेव जी का मन मृत्यु एवं शारीरिक ताप के भय से काँप उठा। राजा जनक शान्त भाव से शुकदेव जी से बोले-

"शुकदेव जी, आप तो अमर है। आपका यह अग्नि कुछ नहीं कर सकती। मेरा, मेरे सगे संबधियों का, मेरे भौतिक सुखों का/अन्त हो जाएगा जिसके लिए मैं तनिक भी चिन्ता नहीं करता। और आपको भी इसके लिए चिन्ता नहीं करनी चाहिए।"







भय से व्याकुल शुकदेव जी को राजा जनक काफी समय तक ज्ञानगर्भित सदुपदेश देते रहे परन्तु उसका शुकदेव जी पर कोई प्रभाव नहीं हुआ। शुकदेव जी की व्याकुलता को बढ़ता देखकर जनक जी ने अपनी शक्ति के बल से अग्नि को शान्त कर दिया जिससे समस्त जीवों एवं संसार में व्याप्त आकस्मिक कौतूहल को शन्ति मिली। राजा जनक के ज्ञान गम्भीर्य, उदार चित एवं सिद्धि के परिणाम को देखकर शुकदेव जी उनसे अत्यन्त प्रभावित हुए और उन्हें अपना गुरू बनाकर उनसे सदुपदेश लिया।

महाराज जनक आत्मज्ञानी महापुरूष थे। भौतिक सुखों के अति भार तथा अधिकाधिक धन सम्पन्नता को परम देव की कृपा से प्राप्त करके भी वह उसका उपयोग अनासक्त भाव से करते थे। शरीर (देह) सम्बन्धी सुखों के परित्याग में उन्हें अलौकिक आत्मिक सुख की उपलब्धि होती थी। शरीर और आत्मा की आवश्यक आवश्यकताओं पर उनकी दृष्टि लगी रहती थी तथा दृढ़ संकल्प से आत्म लाभ के लिए सद्प्रयास कर वह लक्ष्य की सिद्धि करते थे। शरीर सुख की भावनाओं के परित्याग एवं आत्मसुख हेतु निरन्तर प्रयास का अन्तर उनके कर्मो में स्पष्ट झलकता था और इसी अन्तर की झलक के कारण राजा जनक को उनकी प्रजा 'राजा विदेह' कहकर पुकारती थी।

शुकदेव जी कुछ समय तक जनकपुर में रहे और तत्पश्चात् नैमिषारण्य चले गए। नैमिषारण्य में अनायास पर्दापण से वहाँ के ऋषियों ने उनका बड़ा आदर सत्कार किया और अमर कथा सुनने की इच्छा प्रकट की। "अमर कथा को सुनने वाला प्राणी अमर हो जाता है" यह कहकर शुकदेव जी ने उसे सुनाने की अनिच्छा प्रकट की







परन्तु महार्षियों की निरन्तर दीनतापूर्ण अनुनय-विनय ने उन्हें अपना निश्चय छोड़ने के लिए बाध्य कर दिया और वह अमर कथा को सुनाने के लिए सहमत हो गए।

महामानव अपने ज्ञान को संकुचित विचारों की सीमित परिधि में एकत्रित न करके, उसको लोककल्याणकारी कार्यो में उपयोग करते हैं। महार्षियों की विनय एवं प्रेम के वशीभूत होकर शुकदेव जी अमर कथा उन्हें सुनाने लगे। सम्पूर्ण सृष्टि के प्राणी मृत्यु से भय खाते है और अनिश्चित काल तक जीवित रहने की लालसा को निरन्तर सुख-दु:ख में पोषित करते हुए जीवन नौका को क्षण-प्रतिक्षण आगे बढ़ाते हैं। शुकदेव जी द्वारा अमर कथा सुनाए जाने का समाचार तीव्र गति से तीनों लोकों में फैल गया। अमर हो जाने की लालसा को लेकर समस्त देवी-देवता और तपस्वी मुनिगण तथा अन्य प्राणी एवं मानव समाज नैमिषारण्य की ओर बढ़ चले। अनायास हीं सारी सृष्टि को नैमिषारण्य की ओर जाता देखकर कैलाश पर्वत पर विराजमान भगवान शंकर की समाधि भंग हुई और उन्होंने विचार किया कि अमर कथा सुनने वालों के अमर हो जाने से सृष्टि के समस्त प्राणियों की जीवन-मरण का क्रम बन्द हो जायेगा। अत: सृष्टि संचालन के क्रम को बनाये रखने की दृष्टि से भगवान शंकर ने अमर कथा के सुनने वालों को निम्न प्रकार से श्राप दे दिया-

"अमर कथा सुनने वाले प्राणी अब अमर नहीं होंगे लेकिन इस कथा को मैं अब भी ये वरदान देता हूँ कि इसे श्रद्धापूर्वक सुनने वालों को अब मोक्ष प्राप्ति होगी वह शिव लोक को जाएँगे और इस लोक में उनकी समस्त मनोकामनाएँ पूर्ण होंगी।"







उपरोक्त शिव वाणी से समस्त संसार के प्राणी परिचित हो गए और अमरता के गुण के लुप्त हो जाने पर भी अमर कथा के सुनने वालों की उत्सुकता में कोई कमी नहीं आई क्योंकि इस लोकवासी प्राणियों के लिए शिवलोक को प्राप्त होने का भी कम महत्व नहीं होता।

अमर कथा प्रारम्भ

['अमर कथा' इस शब्द का अर्थ है कि ऐसी कथा अथवा प्रसंग जो 'अमर' हो, जिसको पढ़ने वाला 'अमर' हो, जिसको सुनने वाला 'अमर' हो। और संसार के प्राणी युगों-युगों तक उसे दोहराते रहें।

यह कथा माता पार्वती तथा भगवान शंकर का पवित्र संवाद है। स्वयं शंकर भगवान इस कथा के कहने वाले है। इस सम्वाद और इससे सम्बन्धित कथाओं की खोज बड़े ही यत्न से भृगर्षि संहित, नीलमत पुराण और लावनी ब्रह्मज्ञान से की गई है। यह पवित्र कथा लोक व परलोक को सुख देने वाली है।]

भगवान शंकर तथा माता पार्वती के सम्बन्ध में अनेकों कथाएँ समाज में प्रचलित हैं परन्तु भगवान शंकर के श्रीमुख से कही गई यह कथा ही अमर कथा कहलाई इस कथा में भगवान शंकर जी ने स्वयं शिवलिंग दर्शन का महत्व, शंकर भक्ति का अति सुखदायी फल, अमरनाथ यात्रा का सुखद आत्मिक लाभ तथा तत्पश्चात् श्रवण करने वाले व्यक्ति को मोक्ष मिलना निश्चित किया है। लोकहितकारी महादेव जी का इस दिशा में भी स्पष्ट निर्देश है कि जो सत्पुरूष भक्ति भाव, श्रद्धा, विश्वास तथा अगाध लगन से अमरनाथ की यात्रा







करते है उन्हे इस सुखद अमरनाथ तथा अन्य सम्बन्धित स्थलों के दर्शन लाभ का असीम आनन्द प्राप्त होता है आत्मिक सुख जैसे उनका चिरसंगी बन जाता है। निश्चित रूप से ऐसे मानव जीवन मुक्त हो जाते हैं। वह विरक्त भाव से समस्त सांसारिक सुखों का उपयोग करते हैं तथा भक्ति पथ पर लगातार प्रगति करते हुए अंन्य लोगों का भी इस दिशा में सच्चा मार्ग दर्शन करते हऐ उन्हें उचित जीवन लक्ष्य तक ले जाते है।

अमर कथा सुनने-सुनाने की प्रारम्भिक तैयारियाँ कुछ समय में ही पूर्ण हो गई थी। संतशिरोमणि अमर शुकदेव जी अमरकथा सुनने वालों की बहुत बड़ी भीड़ में एक उच्चासन पर विराजमान थे। उन्होने प्रतिपल बढ़ती हुई भीड़ की उत्सुकता को देखते हुंए अमर कथा सुनानी प्रारम्भ कर दी-

प्रिय सज्जनो,

भगवान शंकर जी के साथ विराजमान पार्वती ने उनसे विनयपूर्वक कहा कि:-

हे स्वामी, आपसे विनय करते-करते मैं थक गई हूँ। अमर कथा को शीघ्र सुनने में मेरी आकुलता क्षण प्रतिक्षण बढ़ती जा रही है। आप कृपा करके सम्पूर्ण अमर कथा मुझे सुनाइए जिसके सुनने से जन्म-जन्मान्तर के पाप और ताप मिट जाते हैं।

भगवान शंकर जी ने पार्वती की प्रार्थना स्वीकार कर ली। उन्होंने कहा-हे पार्वती, इस अमर कथा में अमरनाथ यात्रा का विस्तृत वर्णन तथा शिवलिंग दर्शन-लाभ आदि सम्मिलित हैं। अब आप







विस्तार से इस अमर कथा का श्रवण कीजिए।

श्रद्धा भक्ति का सम्पूर्ण लाभ प्राप्त करने के लिए श्री अमरनाथ पूजन विधि तथा यथासामर्थ्य समर्पित करने योग्य अन्य सामग्री को भी मैं तुम्हें बताऊँगा।

हे पार्वती, अमरनाथ यात्रा की इच्छा मात्र रखने वाले मनुष्य का मन शुद्ध होन लगता है। उसके हीन विकार उससे दूर होने लगते हैं। वह सत्कार्यों की ओर उत्साह से पदार्पण करता है। ऐसे मनुष्य की यात्रा भी सफल होती है ऐसे सज्जन को अमरनाथ की यात्रा समाप्त कर लेने के पश्चात् धर्म, अर्थ, काम पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होते है और अन्त मे सब सुखों को भोगकर वह मोक्ष को प्राप्त करता है।

हे पार्वती! यात्रा दो प्रकार की होती है-

1-अंतर्मुखी। 2-बहिर्मुखी।

अंतर्मुखी यात्रा का चयन सिद्ध योगी जन करते हैं। प्राण और अपान वायु के एक हो जाने पर योग-मार्गी दशम् द्वारा अर्थात् व्रत्यरन्ध्र में प्राणी को लीन करता है तथा भगवान अमर नाथ व मोक्ष की प्राप्ति होती है। अंतर्मुखी यात्रा साधारण मनुष्यं की सामर्थ्य के परे है क्योंकि सांसारिक सुखोपभोग की लालसा उसको अंतर्मुखी यात्रा करने में बाधक सिद्ध होती है।

इसीलिए साधारण प्रकृति, उत्साह तथा सामर्थ्य के मनुष्यों के लिए बहिर्मुखी यात्रा का विधान किया गया है जिससे वह अपने जीवन में आत्मिक सन्तोष प्राप्त कर सकें। बहिर्मुखी यात्रा के निरन्तर अभयस्त व्यक्ति ही समय के अंतर से यात्रा की ओर उन्मुख होते हैं







तथा विरक्त भाव से संसार के समस्त सुखों को भोगकर अन्त में मोक्ष प्राप्त करते हैं।

अन्तर्मुखी यात्रा की ओर उन्मुख व्यक्ति संसार में बिरले ही मिलते हैं और जो इस ओर अग्रसर होते हैं वह बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न होकर निश्चित मोक्ष की प्राप्ति करते है परन्तु बहिर्मुखी यात्रा साधारण मनुष्य को सुलभ है। अतः संसारी मनुष्यों को अधिकाधिक लाभ प्रदान करने की इच्छा से यहाँ अमरनाथ की बहिर्मुखी यात्रा का वर्णन करते हैं।

अमर नाथ यात्रा का सम्पूर्ण लाभ के अभिलाषी व्यक्ति को परम शक्तिशाली परम पूज्य अमरनाथ के प्रति श्रद्धासिक्त होकर भक्ति एवं पूर्ण सर्म्पण भाव से अपनी यात्रा प्रारम्भ करनी चाहिए। सांसारिक सुखों और शारीरिक-मानसिक कष्टप्रद दुःखों के प्रति समान भाव रखते हुए अमरनाथ महादेव का ध्यान, गुणगान और उससे सम्बधित वार्तालाप ही करें।

भगवान शंकर जी ने यात्रा की अवधि के सम्बन्ध में अपना मत प्रकट करते हुए पार्वती को बताया कि हे पार्वती, वैसे तो अमरनाथ यात्री मनुष्य के स्थायी से लेकर अमरनाथ शिवलिंग के दर्शन तक के बीच का समय यात्रा काल कहा जाता है तो भी सही रूप में श्री नगर से श्री अमरनाथ की गुफा में शिवलिंग दर्शन तक का यात्रा काल विशेष महत्वपूर्ण है। यात्री को चाहिए कि श्रीनगर में देवशिरोमणि गणेश जी का विधि विधान से पूजन करे तथा षोडष् तीर्थ पर स्नान कर अपने तन को पवित्र करके यथा सामर्थ्य उचित पांत्रों को कुछ दानादिं भी करें तथा महाशिव को निरन्तर स्मरण करते हुए शिवपुरी की ओर अग्रसर होए।







फिर मार्ग में **पद्मपुर** में जो सिद्धों का क्षेत्र हैं वहाँ पर स्नान करे। यहाँ से आगे **मिष्टोट (मिठबन्य) तीर्थ** के दर्शन करके **अवन्तिपुर** की ओर जाये। बांतीपुर (अवन्तिपुर) में महात्माओं के दर्शन लाभ करके **बहन्नाथ (मिहरनाग)** जाकर **हरियारा गाँव** में **हरिदाख्य गणपति विघ्न** विनाशक गणेश जी की पूजा करें। आगे चलकर **बलिहार** क्षेत्र (बालियार ग्राम) में स्नान करने पर यात्रा शुरू करे।

इसके पश्चात् **नागाश्रम** (बगहान) में संगम के समीप जाकर स्नान तथा सदाशिव का ध्यान-भजन करे तीनों तापों तथा मलों का नाश करने वाले इस हस्तिकरण नामक स्थान से चलकर चक्र नामक तीर्थ पर पहुँच करके स्नान के बाद देवताओं तथा ऋषियों का तर्पण करे। हवन तथा जप की समर्था भी हो तो वह भी करे। फिर **देवक तीर्थ** की ओर चले। देवक तीर्थ में स्नान करके **हरिश्चन्द्र तीर्थ** (विजय विहार, बीज विहार) मे स्नान करना चाहिए। यहाँ ऋषभ-ध्वज महादेव जी का पूजन कर हव्य-कव्य से देवताओं के ऋषियों को तर्पण देवें। हे पार्वती! इसके पश्चात् भोजन करे और तीर्थ को नमस्कार कर आगे चले।

लम्बोदरी नदी पर आलस्य त्याग कर स्नान करके थुजवार गाँव में भगवान श्री सदाशिव के दर्शन करे।






श्री सूर्य नारायण का पूजन



अमर नाथ यात्री को चाहिए कि वह एक विशेष साहस के साथ पूर्ण भक्ति भाव में सराबोर होकर अपने यात्रा पथ पर बढ़ता जाये। मार्ग में बढ़ते हुए सुर्य क्षेत्र (**मार्तण्ड भवन-मटन**) में पहुँचे। वहाँ पर सूर्य कुण्ड (**सूर्य गंगा**) में स्नान करके उत्तम स्वच्छ वस्त्रों को धारण करें और तत्पश्चात् भगवान भास्कर के दर्शन करे।

अमरनाथ यात्री को चाहिए कि वह शंकर भगवान एवं सूर्यदेव की स्तुति मे निरन्तर डूबा रहे तथा सद्भाव से सम्पूर्ण यात्रा लाभ की कामना करें। सूर्य-कुण्ड पर पिण्डदान करने से पिण्डदाता के पितरों को मुक्त होना निश्चित बताया गया है। भूत योंनि के असह्य सन्तापों से उनका पिण्ड छूट जाता है और पिण्डदाता के उत्तराधिकारी मनुष्य को वह (पितर) बारम्बार आर्शीवाद देते हुए उसके प्रति आभार मानकर शीघ्र ही सद्गति को प्राप्त होते है।

सूर्यकुण्ड मे स्नान एवं सूर्य भगवान के आनन्दमयी दर्शनों के उपरान्त **सत्कार (साकरस)** स्थान व **भद्राश्रम हयशीर्ष (सिलग्राम) आश्रम** आदि समीपस्थ स्थानों में पहुँचकर अमरनाथ भगवान के परम पवित्र चिन्हों का दर्शन कर आत्म लाभ प्राप्त करें।

सरलक (सलर) ग्राम पवित्र अनन्तनाग तालाब के सुखदायी जल में स्नान करके **बाल खिल्ल आश्रम** (खिल्यन) को जाये।

बाल खिल्ल आश्रम का नाम लेते ही भगवान शंकर के तेजोमयी मुखमण्डल पर एक विशेष आभा निखर आई। पार्वती ने आश्चर्य चकित होकर प्रश्न किया-

हे प्रभो, ऐसा प्रतीत होता है कि आप इस आश्रम के विषय में कुछ और कहना चाहते है।








पार्वती द्वारा उपरोक्त प्रश्न के पूछे जाने पर भगवान शिव ने भाव विभोरता के कारण अपना सिर हिलाकर ही स्वीकृति दी और उदित भावों पर नियंत्रण पाकर इस प्रकार कहा-पार्वती, इस आश्रम की स्थापन्ना से सम्बनधित एक कथा को भी मैं तुम्हें बताना चाहता हूँ। तुम उसका भी ध्यानपूर्वक श्रवण करो।





बालखिल्ल आश्रम की कथा

प्राचीन काल में बालखिल्य नामक ऋषियों ने भगवान विष्णु की एकाग्रचित होकर कई वर्षों तक आराधना की। उनकी आराधना-तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान विष्णु उनके समक्ष उपस्थित हुए और बोले-हे तपसी महर्षियो, मैं तुम्हारी कठोर तपस्या से अति प्रसन्न हूँ आप इसके फल रूप में वरदान माँगो।

इच्छित वरदान माँगने का आदेश सुनकर ऋषिगण उनके चरण कमलों पर गिर पड़े तथा पर्याप्त समय तक उनकी दीन भाव से पूजा करते रहे और उन्होंने इस प्रकार इच्छा व्यक्त की हे-प्रभो, आप भक्तों की पीर को हरने में समर्थ हैं। जल के अभाव के कारण हमें इस स्थान पर अति कष्ट होता है। आप कृपा करके हमें इस निर्जल और शुष्क स्थल में जल उपलब्ध कराने की अनुकम्पा करें।

भगवान विष्णु ने तपस्वी ऋषियों की विनय स्वीकार कर ली और तत्क्षण ही पृथ्वी पर पानी प्राप्ति की इच्छा से अपना पैर जोर से पटका और दूसरे ही क्षण गंगा की निर्मल धारा वहाँ पर प्रवाहित होने







लगी। गंगाधार की ओर संकेत करके भगवान विष्णु ने कहा-

महर्षियों, आपके तपस्या फल के रूप में प्राप्त यह गंगाधर इस बालखिल्ल आश्रम में स्नान करने वाले मनुष्यों को युगों-युगों में प्रलय प्रर्यन्त शारीरक एवं मानसिक सुख प्रदान करती रहेगी।

यह कहकर भगवान विष्णु अन्तर्ध्यान हो गये और महर्षि तपस्या का लाभ मिलने के कारण आनन्द मग्न होकर उनके गुणों का बहुत देर तक गान करते रहे।

इस आश्रम में तपस्या के अद्‌भुत फल का यात्री को ज्ञान-आभास होता है जिससे सांसारिक विलासों से विरक्त होकर शक्तिशाली अमरनाथ एवं शिवोन्मुख तपस्या-साधना हित उनकी चेतना को बल मिलता है।

मामलेश्वर तीर्थ की कथा

पाप तथा विघ्नों से रहित होकर मामलेश्वर क्षेत्र में जाये। यहाँ मामलेश्वर भगवान के दर्शन और-तीर्थ में स्नान करने से मनुष्य आवागमन से छूट जाता है। श्री शुकदेव जी कहने लगे कि इस तीर्थ के विषय में अब आप इस कथा को भी सुनो-

एक बार भगवान शंकर गणेश जी को दोनों ड्योढ़ियों का द्वारपाल बनाकर स्वंय कहीं चले गये। वहाँ से आकर खिल्यावन से ऊपर दण्डक मुनि के आश्रम में विश्राम करने लगे वहाँ कुछ देवता







आ गये। देवता जब आगे बढ़ने लगे तो शिवजी ने उन्हें रोका और कहा कि आगे मत बढ़िये। इस शब्द को सुनकर गणेश जी पाताल से आये और उन्होंने भी यही शब्द कह देवताओं को आगे बढ़ने से मना किया। फिर देवता कुछ सोचकर भगवान श्री सदाशिव में लीन हो गये। भगवान शंकर ने गणेशजी से कहा कि तुम 'मामल' मेरा यह शब्द सुनकर पाताल से यहाँ आये हो अतः अब दीर्घकाल तक यहीं ठहरो और आने वालों के समस्त विघ्नों को दूर करो।

यात्रा करने वाले प्राणी के समस्त विघ्नों को दूर करो। मामलेश्वर का दर्शन करने और गणेश जी का पूजन करने से अश्वमेघ यज्ञ का फल मिलता है। गणेश जी की कृपा से उसकी मनोकामनाएँ पूर्ण होकर उसकी यात्रा भी सफल हो जाती है।

भृगुपति तीर्थ की कथा

पहलगाम में डाक़ बंगले के समीप स्थित इस तीर्थ में स्नान करने से मनुष्य को विशेष आत्मिक शान्ति मिलती है और पापों से उसका छुटकारा हो जाता है।

कहा जाता कि महर्षि भृगु ने इस स्थान पर कठोर तप किया था। उनके कठोर तप से प्रसन्न होकर भगवान विष्णु अन्य देवताओं को साथ लेकर उनसे मिलने आये। भृगु जी ने अपने आसन से उठकर उन्हे प्रणाम किया। सदैव एक रस रहने वाले भगवान विष्णु जी ने भृगु







जी के सिर को चूम कर उन्हें गले से लगा लिया। महर्षि भृगु और विष्णु जी ने जब आपस में आलिंगन किया तो शारीरिक संघर्षण के कारण उनके शरीर से पसीना निकलकर इस स्थल पर गिर गया और वह पसीना ही पवित्र तीर्थ बना। भृगु की तपस्या के कारण यह घटना संभव हुई। इसीलिए इस तीर्थ का नाम भृगुपति तीर्थ रखा गया। इस तीर्थ पर स्नान-ध्यान करने से मनुष्य की मनोकामनाएँ अवश्य पूर्ण होती हैं।

श्री लम्बोदर की कथा

प्राचीन काल में एक बार भगवान शंकर और पार्वती जी इस स्थल पर बैठकर आवश्यक विचार विमर्श कर रहे थे। यहाँ पर उन्होंने अपना अस्थायी निवास स्थान निर्मित किया था। महत्वपूर्ण विषय की गोपनीयता बनाये रखने के लिए उन्होंने गणेश जी को इस निवास गृह का द्वारपाल बनाकर उसे आदेश दिया कि कोई भी देव अथवा मानव निवास गृह मे प्रवेश न करे और उसी समय से गणेश जी भगवान शंकर के इस आदेश का पालन करने लगे।

थोड़ी देर पश्चात् इन्द्र अन्य कुछ देवों को साथ लेकर वहाँ आये उन्होंने भगवान शंकर जी से मिलने का अपना आशय गणेश जी को सुनाया। गणेश जी ने भगवान शंकरजी के आदेश से उन्हें अंदर नहीं जाने दिया। इस पर दोनों में युद्ध आरम्भ हुआ और युद्ध कई







घण्टों तक निरन्तर जारी रहा। अंततः इन्द्रदेव हार गये। और वह अपनी इन्द्रपुरी को वापिस चलें गये।

इन्द्रदेव से लम्बी अवधि तक लड़ते रहने के कारण गणेश जी अति भूख और प्यास से व्याकुल हो उठे। अतः वहाँ के जंगली कन्दमूल आदि के अधिक खा जाने से और बहुत सा गंगा जल पी जाने के कारण गणेश जी का उदर बढ़ गया जिसे देखकर भगवान शिव ने उनका नाम लम्बोदर रख दिया।

लम्बोदर नामकरण कर देने के पश्चात् उनकी दृष्टि अचानक गंगा पर पड़ी जो सूख गई थी। भगवान शिव तुरन्त समझ गए कि सारी गंगा पी जाने से ही गणेश का का पेट बढ़ गया है और जल सूख गया है। उन्होंने तुरन्त ही गणेश जी के पेट पर अपने डमरू से चोट की तो गंगा उनके पेट में से निकल बहने लगी।

लम्बोदर जी के पेट में से निकलने के कारण अब गंगा जी को लम्बोदर कहने लगे। हे प्रिये, मामलेश्वर तीर्थ के पर में बहने वाली गंगा की धारा का नाम लम्बोदरी है। इसके जल के स्पर्श करने से ही करोड़ों जनतों के पापों का नाश होता है। इसलिए यात्रा में इसका स्पर्श आवश्यक है। इसके बाद रंजिबल में गोलाकार पत्थर की नेब मूर्ति का दर्शन करके सीताराम कुण्ड में स्नान करने के बाद आगे बढ़े।

रम्जनोपल की कथा

श्री शुकदेव जी शंकर-भगवान जी द्वारा पार्वती को सुनाई गई







अमर कथा को संत समाज में बैठे सुना रहे थे और सभी जन बड़े ही शांत भाव से उत्सुकता पूर्वक कथा श्रवण कर रहे थे।

लम्बोदार जी की कथा कहने के बाद श्री शुकदवे जी बोले-भगवान शंकर माता पार्वती से कहने लगे कि हे प्रिय ! मार्ग में आने वाले इस **रम्जनोपल** की कथा भी बड़ी ही महत्वपूर्ण है।

रम्जनोपल वन को है, भक्त याद करते,
सीता राम लक्ष्मन का ध्यान यहाँ धरते।
धन्य जैसे वह जग जीवन को करते,
ऐसे सच्चे भक्त मरकर भी नहीं मरते।।

सीता राम लक्ष्मन, आये इस वन में,
समय बनवास का था, रहना था वन में।
मदी राक्षसों को भी था देखा इस वन में,
क्रोध के मारे उनके, पसीना आया तन में।।

ज्यों ज्यों क्रोध बढ़ता, पसीना बढ़ता,
मात्रा की अधिकता पर, टप टप पड़ता।
धरा पर पवित्र जल, पसीना गिरा उसमें,
उपस्थित जलाशयं भक्त श्रद्धापात्र हो गऐ।।

जीवन की हानि से ही बचने बचाने को,
संगियों की व्याकुलता में धीरज बंधाने को।
राम जी ने तुरंत उठाया धनु अपना,
और पापी दैत्यों पर चलाया धनु अपना।।







राम के थे तीर जैसे काल मदी दैत्यों को,
मरे कुछ ललकार से कुछ शस्त्र झंकार से।
आए थे जो प्रथम महामद में उमड़ते,
प्राण दान देकर छुड़ाया तन अपना।।

राक्षसों के तन, राम तीरों के प्रहारों से,
मानों कुछ पल में ही छिद्र-छिद्र हो गए।
मुक्ति पाई उन्होंने संहारे स्वयं राम ने,
मरकर निज रक्त को ही दान दे गए।।

राक्षसों के रक्त से रंगी है धरा यहाँ की,
नित्य यहाँ भक्तों के, दल आते जाते हैं।
पापियों के अंत की कहानी यहाँ सुनते,
गाते रामनाम गुण जीवन सफल बनाते हैं।।

हे पार्वती, मेरे आराध्य श्री रामजी, सीता तथा लक्ष्मण के साथ विचरते-विचरते एक बार यहाँ आये थे। यहाँ रम्जनख्य वन में आकर उन्होंने मद से भरे बड़े-बड़े राक्षसों को देखा। राक्षसों को देखते ही क्रोध के मारे भगवान श्री राम को पसीना आ गया और वह पसीना यहाँ के कुण्डों में पड़ने से ये कुंड पवित्र हो गऐ।

फिर श्री रामचंद्र जी पहाड़ पर चढ़कर बाणों की मार से राक्षसों को मारने लगे। बहुत से राक्षस तो मारे गऐ और कुछ भाग कर इधर-उधर जाकर छिप गऐ। मरे हुए राक्षसों के खून से ये 'गड़र्शल' (पहाड़ी) लाल हो गई। परंतु श्री रामचंद्र जी के चरणस्पर्श होने के कारण ये पहाड़ी पवित्र भी है। इस पर चढ़ने वाला मनुष्य भी पापों







से मुक्त होकर पवित्र होता है। इस रम्जनोपल के दर्शन से भी पापी पाप से छुट जाता है। यहाँ के पवित्र कुंड़ों में स्नान का बड़ा भारी माहत्म्य है।

स्थानु आश्रम (चन्दनवाड़ी) की कथा

श्री शुकदेव जी आगे की कथा कहने लगे कि श्री रामचंद्र और शिवजी के गुण गाता हुआ भक्त रम्जनोपल से चंदन वाड़ी पहँचे। इस स्थान को स्थानु आश्रम भी कहते हैं।

गाते राम धुन में ही, शंकर के गुण को।
भक्तों दल, आगे बढ़ते हैं यहाँ से।
चंदन वाड़ी आश्रम को सुख से निरखते।
और इस जीवन का लाभ वह लेते हैं।।

जैसे मानव से अपेक्षा, होती मानव धर्म को।
ऐसे देवी-देवता निभाते, निज धर्म को।
जहाँ जो अपेक्षा होती, उनसे धर्म-कर्म की।
उसकी सम्मन्नता पर, आदर्श बन जाते हैं।।

धर्म को निभाते, प्रेम पूर्ण प्रेमालाप में।
देवयोग से ही मुख मिले, गौरां शिव के।
काला प्यारा अंजन, उमा की प्यारी आँखों में।
लगा वह अंजन, मुख काला हुआ शिव का।।







गंगा जी की धारा भी समीप में थी बहती।
मानों मुख कालिमा को, हरने को कहती।
शिव ने स्वीकारी, जैसे उसकी आराधना।
गंगा जी की धारा में ही, मुख धोया अपना।।

कालिका के धुलते ही पावन गंगा धारा में।
गंगा जी के जल में, निखर आयी नीलिमा।
"नीलगंगा" नाम दिया, शीघ्र स्वयं शिव ने।
ध्यान गंगा शिव का ही, भक्त यहाँ धरते।।

श्री शुकदेव जी बोले कि एक बार भगवान सदा शिव का मुख पार्वती जी से क्रीड़ा करते हुए उनके नेत्रों में लग गया तब शिवजी का मुख नेत्रों के अंजन से काला हो गया। भगवान शंकर ने अपने मुख को काजल से काला हुआ देखकर यहाँ बह रही गंगा में अपना मुंह धोया तो काजल की कालिमा यहाँ की सम्पूर्ण जल राशि में फैल गई तब से इस गंगा का नाम नील गंगा है।

इस नील गंगा का स्पर्श से दुष्ट मनुष्यों के साथ रहकर जो पाप हुए हों वह नष्ट हो जाते हैं। यह जल स्त्रियों के मन में विकारों का नाश करने वाला है इसमें जरा भी सन्देह नहीं है। इसलिए यह नील गंगा महापापों को नष्ट कर देने वाली नदी कही गई है। यह नीलगंगा पहलगांव से लगभग 11 कि० मी० दूर चन्दन वाड़ी मार्ग में है।

एक बार भगवान श्री सदाशिव दक्ष की पुत्री सती के यज्ञ में जाकर जल जाने पर, वियोग के कारण हिमालय पर्वत पर कठिन तप करने लगे। सती ने अगला जन्म लेकर पर्वतराज के यहाँ पार्वती का रूप पाया तो वह पार्वती पुनः शंकर जी को पाने की अभिलाषा से उनकी सेवा करने लगीं।








निरन्तर कई वर्षो तक सेवा करते रहने पर भी सदा शिव की समाधि भंग न हुई। तब पार्वती इस चन्दन वाटिका मे बड़ी घबराई, जबकि शंकर भगवान वृक्ष के समान निश्चल रूप से तपस्या मे निमग्न थे। इसी वाटिका का नाम बाद में महापाप विनाशक प्रसिद्ध हुआ।

भगवान शंकर ने पार्वती को बताया कि हे देवी! इस स्थानु आश्रम में आकर में आकर (चन्दवाड़ी के पास) जो स्नान करेगा वह शिवधाम को प्राप्त करेगा। ब्रह्म हत्या और गौ हत्या आदि करने वाला मनुष्य यदि यहाँ स्नान कर ले तो समस्त पापों से छूट जाता है।

इसके पश्चात् यात्री को **पौषाख्य पर्वत** (पिस्सू घाटी) की ओर चलना चाहिए।

पिस्सू घाटी की कथा

श्री शुकदेव जी कहने लगे कि प्राचीन काल में एक बार भगवान शंकर इस पिस्सू घाटी के समीप उच्च शिखर पर विराजमान थे। देवतागण तो उनके दर्शनों की इच्छा से सदा ही आते रहते थे परन्तु इस बार राक्षस भी उनके दर्शन करने की इच्छा लिए देवताओं के साथ ही उच्च शिखर की ओर चल पड़े। कुछ मार्ग तो दोनों ने शान्ति पूर्वक तया किया परन्तु उच्च शिखर की ओर बढ़ने से पूर्व ही दैत्यों के उग्र स्वभाव ने अपना विकराल रूप धारण किया। उन्होंने देवताओं को सम्बोधित करते हुए गरजकर कहा

देवताओं! हम उच्च शिखर पर पहले चढ़ेंगे। आप हमारे पीछे-पीछे आना! आज महादेव जी के दर्शन हम आपसे पहले करेंगे।








राक्षसों की ओर से रोषपूर्ण ललकार सुनकर देवता भी शान्त नहीं रह सकें। उनके अधिकार का हनन हो रहा था। देवताओं ने भी ललकार कर कहा-

अरे पापी राक्षसों! पहले शिखर पर हम चढ़ेंगे और हम ही पूर्व की भांति महादेव जी का प्रथम दर्शन लाभ प्राप्त करेंगे।

बाद में विवाद के बढ़ जाने तथा दोनों पक्षों द्वारा अपनी बात पर बल दिये जाने के कारण देवताओं और राक्षसों में युद्ध होने लगा। राक्षसों की संख्या देवों की अपेक्षा बहुत अधिक थी जिससे देवता हारने लगे। ऐसी स्थिति में उन्होंने भगवान शंकर की मन ही मन स्तुति की। भगवान शंकर की परम कृपा के कारण उनमें नवीन शक्ति का संचार हुआ जिसके कारण उन्होंने राक्षसों को मार दिया। क्रोध की प्रचुरता एवं प्रचण्डता के कारण उन्होंने राक्षसों की हड्डियां को निकाल पीस-पीस कर चूर्ण का एक बड़ा ढेर कर दिया। राक्षसों की हड्डियों के पीसे जाने के कारण ही इस घाटी का नाम "पिस्सू घाटी" प्रसिद्ध हुआ है।

जो शिव भक्त श्रद्धा विश्वास से भक्ति भावना में डूबकर इस पिस्सू घाटी में विचरण करते हैं उन पर महादेव की कृपा इसी प्रकार होती है जैसे कि देवताओं पर हुई थी और इस लोक में समस्त सुखों को भोगकर मरणोपरान्त मोक्ष को प्राप्त करते हैं।

यह पर्वत यानि पिस्सूघाटी अब भी शिव भक्तों के तीनों तापों को हरती है। शंकर जी ने बताया कि हे देवी ! जो मुझको स्मरण करता हुआ इस पर्वत पर चढ़ेगा उसे मैं निश्चय ही अपने लोक में बसाऊँगा।




इस घाटी में शेष नाग का दर्शन करके उसकी पूजा करे। फिर यहाँ के पत्थरों से छोटी सी गुफा बनाकर भगवान श्री अमरेश्वर का स्मरण करके आगे बढ़ना प्रारम्भ करे दे।

शेषनाग पर्वत की कथा

आदि काल की बात है कि इस पर्वत पर एक बलवान राक्षस निवास करता था। उसका रूप वायु के समान था। पवनाकार होने के कारणं वह देवताओं को कष्ट देने लगा। उसमें अपार शक्ति होने के कारण देवता उसका कष्टमय प्रहारों से व्यथित होकर भगवान सदाशिव के पास गये और उन्हें राक्षस के सम्बध मे बताया।

देवताओं का करूण क्रन्दन सुनकर भगवान शिव जी कहने लगे, हे देवताओं मैंने इस राक्षस को दीर्घायु होने का वरदान दे रखा है इसलिए आप सब विष्णु भगवान के पास जाओ। देवता विष्णु जी के पास गये और सम्पूर्ण व्यथा एवं शंकर जी की कही बात उन्हे सुनाई। देवताओं ने विष्णु भगवान की अनेक प्रकार से स्तुति भी की जिससे वह प्रसन्न हो गये और बोले-

"देवताओं, आप जाकर अपने-अपने लोकों में शान्तिपूर्वक निवास करो। मैं शीघ्र ही इस वायु रूपी अत्याचारी दैत्य का अन्त कर दूँगा।"

भगवान विष्णु ने देवताओं को शान्ति पूर्वक विदाई दी और







पाताल लोक से शेषनाग को बुलाकर उसे साथ लेकर इस पर्वत पर आ गये। शेषनाग को सम्बोधित करते हुए भगवान विष्णु ने उसे इस प्रकार आज्ञा दी–

"हे शेषनाग! इस पर्वत पर व्याप्त यह वायुरूपी बलशाली राक्षस देवताओं को दुःख दे रहा है। तुम अपने सहस्र मुखों द्वारा इस वायुरूपी राक्षस का पान करो क्योंकि वायु ही तुम्हारा आहार है और इस राक्षस में लिप्त समस्त वायु का पान कर शीघ्र इस दुष्ट दैत्य का अन्त कर दो।"

शेषनाग ने भगवान विष्णु की आज्ञा शिरोधार्य कर ली और उस वायुरूपी राक्षस का अपने सहस्र मुखों द्वारा कुछ ही क्षण मे पान कर गया। इस प्रकार विष्णु की सहायता से भंयकर राक्षस का अन्त सम्भव हुआ जिसका कारण शेषनाग को बनाया गया इसीलिए इस पर्वत को 'शेषनाम पर्वत' कहते हैं।

कुछ समय पश्चात एक दूसरा प्रष्टता नामक राक्षस पुनः इसी पर्वत पर प्रकट हुआ और वायु में मिलकर देवताओं को तंग करने लगा। जिसके अन्त के लिए देवों ने पुनः शिव से प्रार्थना की तो शिवजी ने कहा–

हे देवताओं! आप इस पर्वत पर झोपड़ी (मंढिये) बनाकर वायु को रोक दो और फिर इच्छित समय तक निवास करो। दैत्य तुम्हारा कुछ भी अनर्थ नहीं कर सकता। देवता शिवजी का परामर्श मानकर पर्वत पर मढिये बनाकर निवास करने लगे। दैत्य द्वारा पुन विकराल रूप दिखाने पर इंद्र ने देव कृपा के कारण अपने वज्र से उसका सिर काट डाला। उसी समय से यह स्थान 'वायुवर्जन तीर्थ' के नाम से







प्रसिद्ध है। शंकर जी के श्रद्धालु भक्त यहाँ पर अपने पूज्य देवों के लिए मढ़ियों की रचना करके उनके प्रति अपनी भक्ति भावना प्रदर्शित करते हैं। यहाँ पत्थरों द्वारा देवताओं के लिए छोटे-छोटे घर बनाने तथा तीर्थ के दर्शन से मनुष्य अनन्त पुण्य को प्राप्त करता है।

हत्यारा तालाब की कथा

हे देवी ! इस तालाब के समीप देवराज इंद्र एवं सदाशिव ने राक्षसों की हत्या की थी। इसीलिए इसे हत्यारा तालाब कहा जाता है। यह तालाब सूख गया है इसका कारण विस्तार से सुनो जिसके सुनने से मनुष्य संशय से रहित हो जाता है।

जब भगवान सदाशिव तथा देवराज इन्द्र ने मिलकर पृथ्वी से राक्षसों को नष्ट करना शुरू किया तो कुछ राक्षस भाग कर इस तालाब में आकर छिप गये। कुछ समय बीत जाने पर वह राक्षस तालाब से निकल कर फिर लोगों को सताने लगे। भगवती पार्वती और शिवजी जब विचरण करते हुए यहाँ पहुँचे तो पार्वती ने शिवजी से लोगों का दुःख दूर करने को कहा। सदाशिव ने क्रोध से हुँकारा किया तो राक्षस डरकर फिर इसी तलाब में छिपने लगे। सदा शिव ने तालाब को श्राप दे दिया तालाब तुरन्त सूख गया।

श्री शुकदेव जी ने बताया कि इस स्थान पर यात्रियों को मौन होकर यात्रा करनी चाहिये।




पंचतरनी की कथा

हे पार्वती ! पूर्वकाल में एक बार सदा शिव ताण्डव नृत्व कर रहे थे। नृत्य करते-करते उनकी जटा-जूट ढीली हो गई। जटा ढीली जो जाने से उसमें से गंगा की पाँच धारायें निकलने लगीं। यह वही पंचतरनी गंगा है।

पंचतरनी महापापों का नाश करने वाली है। यहाँ स्नान करने से वही फल मिलता है जो कुरूक्षेत्र, प्रयास या नैमिषारण्य में स्नान करने का होता है। इसमें स्नान के बाद ऊँची चोटी वाले पर्वत पर चढ़कर डमारम देवता के दर्शनों को जाना चाहिये।

डमारम देवता की कथा

आदि काल की बात है कि एक बार भगवान शंकर जी कार्तिकेय स्वामी के साथ आवश्यक विचार विमर्श कर रहे थे। विचार विमर्श में सम्पूर्ण ध्यान मग्नता के कारण शंकर जी को पता ही नहीं चला कि सन्धया काल व्यतीत हो गया। डमारम नामक गण को सन्धया काल का स्मरण दिलाने का भार सौंपा गया था। उसे सन्ध्याकाल से पूर्व ही निद्रा ने घेर लिया। उसको निद्रा आ जाने के कारण ही शंकर जी सन्ध्या काल के अपने निश्चित कार्यक्रम को पूर्ण नहीं कर पाये।

सन्ध्याकाल के व्यतीत हो जाने पर जब शंकर जी का ध्यान अपने निश्चित कार्यक्रमों की ओर गया तो उसका समय बीत चुका था। वह डमारमगण की भयंकर भूल पर क्रोध से जल उठे। उन्होंने







उसे तुरन्त बुलकार शिलारूप हो जाने का श्राप दिया। गण ने विभिन्न प्रकार से भक्ति-विनती करते हुए क्षमा याचना की परन्तु शाप तो नहीं लौटा लेकिन शिवजी ने उस पर इस प्रकार से कृपा की-

हे डमारम ! तुम्हे अपनी भंयकर भूल के कारण शिलारूप होना पड़ रहा है। इस भूल का परिणाम तुम्हें अवश्य भुगतना पड़ेगा परन्तु शिलारूप रहने पर भी जो मनुष्य अमरनाथ यात्रा के लिए आयेंगे वह सभी भक्तगण प्रलय पर्यन्त तेरी पूजा-आराधना भी करते रहेंगे। तुम्हारी परिक्रमा करने से ही उन्हें अमरनाथ यात्रा का लाभ प्राप्त हो सकेगा।

भगवान शंकर के अंतिम वचन सुनते-सुनते डमारम गण शिलारूप हो गया और उसी दिन से रत्न नामक शिखर पर पाषाण रूप में रहता है। जो मनुष्य श्रद्धा भाव से उसकी पूजा परिक्रमा करते हैं वही अमरनाथ दर्शन के योग्य होते हैं।

अमरनाथ यात्री को चाहिए कि वह श्रावणी के दिन डमारम देवता के दर्शन करे। उसे श्रद्धा भाव से आवश्क भोग्य पदार्थ, पुष्प आदि समर्पित करे।

गर्भ योनि की कथा

शेषनाग पर्वत से विचरण करते हुए डमारम देवता के दर्शन करने के पश्चात् यात्री को चाहिए कि वह गर्भ योनि मे प्रवेश करें तथा शिव नाम का मन ही मन स्मरण करता हुआ अमरावती नदी की







निर्मल जल धारा पर पहुँच कर उसमें शंकर जी की भक्ति भावना में पूर्ण रूप से डूबकर स्नान करे। अपने तन पर भस्म रमाये। संसार से विरक्ति की भावना को मन में दृढ़ निश्चय के साथ धारण करके भक्ति रस में आत्मविभोर हो जाये तब ही उसे अमरावती नदी में स्नान, शंकर-ध्यान तथा अमरनाथ यात्रा का सम्पूर्ण लाभ प्राप्त होता है। कठिन तपस्या से तपे हुए ऐसे तपस्वियों के तन-मन सर्वथा बन्ध न मुक्त जो जाते हैं और सांसारिक कष्ट उन्हें लेशमात्र भी व्यथित नहीं करते।

एक बार भगवान शंकर कैलाश पर्वत पर अपने निवास गृह में आत्म-रस-विभोर नृत्य कर रहे थे। किसी भी आकस्मिक व्यवधान को रोकने के लिए नन्दी को द्वारपाल नियुक्त करके आदेश दिया-"नन्दी ! तुम सचेत होकर गृह के दरवाजे पर रहो। तुम्हारे रहते कोई मनुष्य अथवा देवता आदि अन्दर प्रवेश नहीं करेगा।

नन्दी भगवान शंकर जी का कठोर आदेश पाकर अपना कर्तव्य पालन करने लगे।"

थोड़ी देर पश्चात् कुछ देवता वहां पर शंकर जी के दर्शन करने की इच्छा से आये। द्वारपाल ने उनको शंकर जी के आदेशों से अवगत कराया परन्तु उन्हें उसकी बात पर विश्वास नहीं हुआ और देवताओं ने बलपूर्वक गृह में प्रवेश करने का प्रयास किया। उस पर नन्दी और देवताओं में युद्ध आरम्भ हो गया। युद्ध में शस्त्राशस्त्र की मारामार तथा हाहाकार के कारण शंकर जी का ध्यान उनकी ओर आकर्षित हुआ। उन्होंने नन्दी को बुलाकर युद्ध का कारण पूछा तो शंकर जी को देवताओं की हठ का ज्ञान हुआ। उन्होंने देवताओं के प्रति आक्रोश







प्रकट करते हुए नन्दी ने कहा-

नन्दी तुम यह मेरा दण्ड धारण करो और आवश्यकता पड़ने पर युद्ध में इसका उपयोग करो। इस दण्ड की मार दैत्यों के लिए असहनीय है। अब तुम द्वार पर चलो और युद्ध को पूर्ण रूप से टालने के लिए गृह के प्रवेश द्वार पर गर्भ योनि नामक पत्थर रख दो जिसके कारण देवता अन्दर प्रवेश नहीं कर सकेंगे।

नन्दी ने तत्क्षण ही द्वार पर आकर गर्भ योनि नामक पत्थर को रख दिया। इस पत्थर को गर्भ योनि इसलिए कहा जाता था कि इसमें योनि के सदृश एक छिद्र था। विशाल पत्थर के द्वार पर रख दिये जाने के कारण सभी देवता निराश होकर अपने-अपने लोकों को चल गए।

हे प्रिये! जो मनुष्य इस गर्भ योनि में से निकल कर अमरनाथ के दर्शन करने जाता है उसकी यात्रा सफल होती है। उसे आत्मतुष्टि जैसा अमोल रत्न प्राप्त होता है। उसका पुनर्जन्म नहीं होता।

'शिव-शिव' उच्चारण करते हुए इस गर्भयोनि में से निकल कर क्रोध, लोभ और मोह आदि विकारों को त्याग कर आगे के पहाड़ पर चढ़े। अमरनाथ की यात्रा में कुल 30 स्नान है और 36 स्थानों पर विभिन्न देवताओं के दर्शन हैं जिनके करने से निश्चित ही शिवधाम की प्राप्ति होती है। इन स्नानों और देव स्थानों के दर्शन करता हुआ मनुष्य रसात्मक लिंग के दर्शनों को जाये तो मोक्ष की प्राप्ति होती है। अमरेश महादेव के एक बार के दर्शनों से ही बार-बार के जन्म-मरण का दुःख नहीं भोगना पड़ता।











अमरेश महादेव की कथा

श्री शुकदेव जी ने कहा कि अब मैं अमरेश महादेव की कथा विस्तार से आपको सुनाता हूँ, ध्यान से सुनिये।

भगवान शंकर कथा प्रारम्भ करने ही वाले थे कि पार्वती ने बीच में ही अनुरोध किया–हे महाप्रभो, अमरेश महादेव की कथा सुनने से पुर्व मैं यह जानना चाहती हूँ कि सदाशिव का 'अमरेश महादेव' नाम किस कारण से है और ये नाम किसने रखा? महादेव ही गुफा में लिंगरूप में विराजमान होकर अमरेश क्यों कहलाये?

भगवान शंकर ने उत्तर दिया–

हे पार्वती ! आप जानती हैं–संसार परिवर्तनशील है ! पंचभूतों से निर्मित समस्त सांसारिक वस्तुएँ क्षण-प्रतिक्षण अपना रूप परिवर्तन करती हैं। प्रतिदिन अनेक वस्तुओं की सृष्टि एवं संहार होता है। प्राणियों के शरीर बदलते हैं शरीर छूटने पर आत्मा नये शरीर को धारण करती है।

किन्तु अमरेश महादेव ही शाश्वत हैं। अपरिवर्तनशील हैं। सांसारिक परिवर्तन की दैनिक नाटकीय लीला से सर्वथा परे हैं। संसार का आकर्षण उन्हे अपने मोहपाश में नहीं बांधता। संसार के सारे बड़े-बड़े बन्धन भी उनके विस्तार के समक्ष छोटे पड़ जाते हैं। अमरेश महादेव ज्ञान के अगाध समुद्र हैं। अतः इस विस्तृत ब्रह्माण्ड का विरक्त भाव से सफल संचालन करने में सक्षम हैं। अमरेश महादेव को उनकी अमरता, शाश्वता तथा अपरिवर्तन शीलता के कारण ही उन्हें अमरेश कहा जाता वह संसार की प्रत्येक वस्तु और प्राणियों के संचालक होते हुए भी उनमें सूंक्ष्म रूप से विद्यमान हैं।







हे पार्वती, अमरेश महादेव की अमरता के गुण को अनेक लौकिक प्राणियों के साथ-साथ समस्त देवता और राक्षस आदि भी स्वीकार करते है। देवता भी अमरता के गुण से विभूषित हैं जो उन्हें अमरेश महादेव की कृपा से प्राप्त हुई। अमरेश महादेव द्वारा देवों की अमरता प्रदान किये जाने के सम्बन्ध में मैं आपको सुनाता हूँ, आप ध्यानपूर्वक श्रवण करो।

हे देवी, सृष्टि रचना के आरम्भ में सृष्टिकर्ता अमरेश महादेव ने क्रमशः तीनों लोकों विस्तृत ब्रह्माण्ड और समस्त जगत में स्थावर और जंगम प्रकृति की सृष्टि की और समयान्तर पर मनुष्य, राक्षस, देव, किन्नर, गन्धर्व, अप्सरा, जीव, जन्तु और आकाशीय, जलीय, स्थलीय प्राणियों आदि कि उत्पत्ति भी की। कर्मानुसार समस्त जीव अपनी-अपनी योनियों में विचरण करने लगे। देवताओं को उनकी शक्ति के अनुसार अपने-अपने कार्यो का भार दिया गया और उन्हें भी अन्य प्राणियों की भाँति मरणशील बनाया गया। तब देवताओं की श्रेणी में मुक्त जीव आते थे।

हे देवी, संसार के समस्त मनुष्य अमरेश महादेव द्वारा प्रदत्त बुद्धि बल पर अपने-अपने दैनिक जीवन पथ का निश्चय करते है अर्थात् अमरेश महाप्रभो जैसा चाहते हैं वैसा ही प्राणी से करा लेते हैं।

अतः यही कहना चाहिए कि अमरेश महादेव जी की कृपा से ही देवताओं मे एक नई भावना का संचार हुआ और वह सब मिलकर भगवान श्री सदाशिव के पास जा पहुँचे। देवताओं ने उन्हें कहा कि हमें कार्यो मे मृत्यु बड़ी बाधा करती है, कार्य अभी पूरे नहीं हो पाते कि देवता मर जाते हैं और काम अधूरे रह जाते हैं। अतः आप कृपा







करके कोई ऐसा उपाय बतायें कि जिससे मृत्यु हमारी बाधा न बने।

भगवान श्री सदाशिव ने मन ही मन कुछ विचार कर कहा-

"हे देवताओं ! मैं संसार के लिए तुम्हारी निरंतर आवश्यकता को देखते हुए तुम्हें अमरता का दान देता हूँ। आप सब धैर्य धारण कर इसके परमानन्द को प्राप्त करना।"

यह कहकर भगवान अमरेश ने सिर पर शोभित चन्द्रमा को हाथ से उतार कर अपनी सूक्ष्म शक्ति से निचोड़ा। हे देवी! इस चन्द्रकला के निचोड़ने से पवित्र अमृत की धारा वह निकली और वही धारा यह **अमरावती नदी** है। अमरेश जी ने कहा-

हे देवताओं ! अमरावती की इस पावन जलधारा में स्नान करो और अमर होकर अपने-अपने लोकों को प्रस्थान करो। अमरता देने वाली यह अमर औषधि है। भगवान अमरेश इस प्रकार के देवताओं को प्रेम दिखाते हुए द्रवीभूत हो गए। सभी देवता श्री अमरेश जी का जल-स्वरूप देखकर उनकी स्तुति करने लगे। तब बार-बार देवता भी बड़े ही विभोर होकर नतमस्तक होते और अमरेश महादेव की महिमा का गुणगान करते जाते थे तब अमरेश जी महाराज ने पुनः अपना यथार्थ स्वरूप धारण करके उन्हें दिखाया।

इसी कारण प्रत्येक पक्ष में ये अमृत पिघलता है और फिर से जम जाता है।

शंकर जी ने पार्वती का यह भी बताया कि चन्द्रकला के निचोड़ने से अमृत की बूंदे पहले सदाशिव के शरीर पर पड़ी और वह सूख गई फिर बाद में पृथ्वी पर गिर कर अमरावती नदी बन गई। अमरनाथ गुफा में जो भस्म है वह इन्ही अमृत बिन्दु की बहिन है।







भगवान श्री अमरेश का द्रवीभूत यही अमृत रस जहाँ जमकर लिंग रूप से परिवर्तित हो गया। लिंग रूप को भी द्रवीभूत हुआ देखकर देवता बार-बार उसको नमस्कार करने लगे। तब अमरेश जी ने बड़ी दयायुक्त वाणी मे देवताओं से कहा-

हे देवताओं ! तुमने मेरा बर्फ का लिंग शरीर इस गुफा में देखा है। इससे मेरी कृपा से अब तुम्हें मृत्यु का भय नहीं रहेगा अब तुम अमर होकर शिव रूप को प्राप्त हो जाओगे। आज से ये मेरा अनादि लिंग शरीर तीनों लोकों में 'अमरेश' के नाम से विख्यात होगा।

इस प्रकार देवताओं को अमरेश तथा मनुष्यों के कल्याणहित शिवलिंग का दान देकर भगवान अमरेश अन्तर्ध्यान हो गये और सभी देवों ने सदाशिव की जय-जयकार की ध्वनि के साथ अपने लोकों को गमन किया और सत्ता रूप से गुफा में भी रहे हे पार्वती-भगवान अमरेश उसी दिन से इस गुफा में स्थित शिवलिंग मे लीन हैं। अमरेश महाराज ने अमृत रूपी सोमकला से देवताओं को अमर किया तभी से उनका नाम 'अमरेश्वर' प्रसिद्ध हुआ।





अमरेश महादेव की महिमा

अमरनाथ की यात्रा तथा शिवलिंग 'अमरेश' दर्शन का लाभ प्राप्त करने की भावना का मन में उत्पन्न होना तथा उसकी सम्पूर्णता के लिए प्रयास करना भी महादेव की कृपा से ही होता है। ऐसी धर्म-कर्म-भावना को धारण करने वाला व्यक्ति अमरेश की कृपा से







पूर्ण आत्मसन्तोष को प्राप्त करता है तथा जग के अनेकानेक क्षणिक आकर्षण उसके सद्मार्ग में कोई भी बाधा उपस्थित करने में असमर्थ हो जोते हैं।

आत्मशक्ति एवं आत्मशुद्धि मनुष्य को बड़ी कठिनाई से प्राप्त होती है परन्तु अमरेश महादेश की यात्रा तथा उस परमदेव के लिंग दर्शन से आत्मशक्ति एवं आत्मशुद्धि दोनों मनुष्य में स्थायी निवास करती हैं क्योंकि यात्रा में अनेक कठिनाइयों से जूझता हुआ मनुष्य का मन अमरेश की शरण में पहुँचकर उसके (शिवलिंग के) दर्शन से पूर्ण पवित्र हो जाता है।

अमरनाथ यात्रा तथा तथा शिवलिंग दर्शन से सद्पुरूष की धर्मभावना को असीम बल मिलता है। काशी में शिवलिंग दर्शन तथा पूजन से दस गुना, प्रयाग से सौ गुना, नैमिषारण्य तथा कुरूक्षेत्र से हजार गुना लाभ अमरेश जी के दर्शन-पूजन से प्राप्त होता है। देवताओं की अनेक वर्षो से पूजा करने में जो फल मनुष्य को प्राप्त होता है उससे कई गुना फल अमरेश के रसलिंग के पूजन से प्राप्त होता है। क्योंकि अमरेश जी के भक्त मार्ग की अनेक बाधाओं को पार कर उनके दर्शनाथ पहुँचते हैं।

त्याग का फल आत्मसन्तोष होता है। अपने सर्वशक्ति सम्पन्न अमरेश महादेव को जो भक्तगण अधिकाधिक वस्तुओं (जैसा, सोना, चांदी, मोती, वस्त्राभूषण तथा दीप-धूप, पुष्प, नैवेद्य, तथा अन्य साधारण भोग्य पदार्थ आदि-आदि) का श्रद्धा-भक्ति भाव से आनन्दमग्न होकर इच्छित समर्पण करते हैं, वही पूर्ण आत्मसन्तोषी होकर जीवन में परम सुख को भोगते हैं और ऐसे अनन्य भक्तों पर अमरेश महादेव







की कृपा सदैव होती है जिसका आभास अपने जीवन मे उन्हें निरन्तर होता रहता है।





कबूतरों का रहस्य

भगवती पार्वती नें भगवान शंकर से पूछा–हे दयालु महादेव ! आप सम्पूर्ण सुष्टि में व्यापत पदार्थों एवं जीवों के सम्बन्ध मे पूर्ण ज्ञान रखते हैं। मुझे कुपा करके अमरनाथ यात्रा के मार्ग मे दिखाई पड़ने वाले कबूतरों का रहस्य विस्तार से समझाइये।

करूणानिधान शिंव ने पार्वती की विनती स्वीकार कर ली और बोले–हे देवी, कबूतर के रूप में दृश्यमान सदाशिव के दो गण हैं। जिन्हें उनके कार्य कलापों से अप्रसन्न होकर सदाशिव ने श्राप दे दिया था। श्राप देने का कारण भी आप ध्यान से सुनो–

एक बार भगवान सदाशिव सन्ध्याकालीन नृत्य में तल्लीन थे। उनके दो गण वहीं पर बैठै थे। उन्होंने परस्पारिक वाद्-विवाद के कारण कबूतर जैसी आवाज (कुरू-कुरू) में बोलना शुरू कर दिया। इस आवाज से भगवान सदाशिव का ध्यान भंग हुआ। वह क्रोध से परिपूर्ण होकर उन्हे श्राप देते हुए बोले–"दुष्ट गणों, तुमने मेरे नृत्य में कुरू-कुरू (कबूतर जैसी आवाज) की शब्द ध्वनि से विघ्न पैदा किया है। तुम दोनों अनन्त समय तक इसी आवाज को दोहराते हुए अन्त में कबूतर हो जाओगे।"







भगवान श्री सदाशिव का श्राप सत्य हुआ। अमरनाथ यात्रियों को निरन्तर आज भी इन कबूतरों के दर्शन होते हैं। यात्रियों को चाहिए कि वह अत्यन्त श्रद्धा भाव से इन कबूतरों के दर्शन करें तथा ध्यान मग्न होकर भगवान सदाशिव का भजन करें।

यात्रा का समय

भगवान के भक्तों के परम शुभ एवं शीघ्र कल्याण के लिए माता पार्वती ने सदाविशिव ने यह निवेदन भी किया।

हे प्रभो ! आप अपने भक्तों पर कृपा करके यह भी बतलाइये कि उन्हें किस समय में अमरनाथ यात्रा करनी चाहिए जिससे उनका अधिक से अधिक कल्याण हो। किस मास में यह यात्रा महाफल देने वाली है।

पार्वती के वचन सुनकर भक्तहितकारी शिव ने अपनी मधुर वाणी से इस प्रकार कहा-पार्वती ! भगवान सदाशिव का कृपापात्र बनने के लिए मनुष्य को चाहिए कि वह श्रावण मास में अमरनाथ यात्रा करे। मौसम की अनुकूलता एवं प्रतिकूलता मे अपना मानसिक संतुलन बनाये रखे तथा अमरेश भक्ति में पूर्ण रूप से आत्मविभोर होकर अमूल्य सन्ताप धन प्राप्त करे।

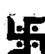
हे देवी ! श्रावण मास की पूर्णिमा पर जो लिंग दर्शन होते है वे दर्शन बड़े भारी पुण्य को देने वाले होते हैं। क्योंकि इसी दिन अमरेश महाराज ने अपना ये स्वरूप प्रकट किया था।







श्री अमरनाथ जी का दर्शन व स्पर्श करके पंचतरनी के उत्तर में संगम पर जाकर पितरों की प्रसन्नता के लिए श्राद्ध करे। लौटकर यात्री को मामलाख्य महाग्राम में पहुँच कर गणेश जी का पूजन करना चाहिए। वहाँ गंगा के तट पर खड़ी भगवती जी से अपनी यात्रा के सम्पूर्ण लाभ के निमित्त प्रार्थना करे। फिर पाताल गंगा में स्नान करके अपने-अपने घरों को वापिस जाना चाहिए।

श्री अमरनाथ गुफा

यह 51 शक्ति पीठों में से एक पीठ है ! समुद्र की सतह से 12729 फीट ऊँचाई पर पर्वत में यह गुफा लगभग 16 मीटर लम्बी, 9 मीटर चौड़ी तथा लगभग ढाई मीटर ऊँची है। यह प्रांकृतिक गुफा है और इसमें हिम प्राकृतिक पीठ पर हिम निर्मित प्राकृतिक शिवलिंग है।

यह हिमनिर्मित शिवलिंग सर्दियों में स्वतः बनकर और फिर बहुत ही मन्दगति से क्षीण होता जाता है। हिम का यह प्राकृतिक शिवलिंग कितना ही छोटा हों जाए परन्तु पूर्णतया लुप्त कभी नहीं होता। इतिहास में यह कभी लुप्त हुआ हो, इसमें सन्देह ही है। इस गुफा में ही पार्वती पीठ तथा एक गणेश पीठ भी हिम से बनता है।

अमरनाथ का शिवलिंग वास्तव में एक आश्चर्य जनक सत्य है। यह शिवलिंग ठोस (पक्की) बर्फ का बनता है जबकि गुफा के समीप सर्वत्र कच्ची बर्फ होती है। अमरनाथ गुफ के नीचे ही अमर गंगा का जल प्रवाह है। यात्री इस अमर गंगा मे स्नान करके ही







अमरनाथ गुफा में दर्शनों के लिए प्रवेश करते है। गुफा के ऊपर श्री रामकुण्ड है उसका जल पहाड़ में से रिस-रिस कर गुफा के अंदर टपकता है। गुफा के समीप एक जगह से सफेद भस्म जैसी विचित्र प्रकार की मिट्टी निकलती है। इस भस्मी को यात्री प्रसाद स्वरूप लाते है।

यहाँ पर ये बात भी बता देना जरूरी है कि लोगों में यह धारणा गलत है कि ये हिमनिर्मित शिवलिंग शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से क्रमशः बनता है और कृष्ण पक्ष में धीरे-धीरे घटता हुआ अमावस्या को नहीं रहता।

यदि मौसम साफ हो और धूप निकल आये तो अमरनाथ गुफा में विशेष शीत का अनुभव नहीं होता और दूर-दूर तक के हिम शिखरों की शोभा बड़ी भली लगती है। भगवती अमरनाथ जिसकी जैसी भावना के अनुसार सबको मनोवांछित सुख प्रदान करते हैं।

अमरनाथ की यात्रा में यात्रियों का उमडता सागर

प्रकृति की मनोहरी सुषमा की साम्रज्ञी पहलगांम की घाटी सूरज की पहली किरण की प्रतीक्षा में आतुरता से बाहें पसारे हुए थी। घाटी मे हर तरफ लोग ही लोग नजर आ रह थे.... इधर-उधर भागते अपने-अपने सामानों को बटोरते-सहेजते लोगों का समूह अब एक







काफिला बन चुका था। सबसे आगे चाँदी की छड़ी लिए महन्त और उनके पीछे बांस की छड़िया हाथों में लिए हुए साधुओं को समूह फिर भजनीक उपदेशक ढेर सारे साधु-सन्यासी और हजारों तीर्थ-यात्री। हवा में घुल गई थी श्रद्धा और विश्वास की अलौकिक गंध। तभी 'बाबा अमरनाथ जी की जय' से सारी पहलगाम घाटी गूँज उठी और टेढ़ी-मेढ़ी पर्वतीय सड़क पर रेंगते हुए किसी विशाल अजगर की तरह यह काफिला बढ़ चला अमरनाथ की ओर। धीरे-धीरे रास्ता और भी संकरा होता जा रहा थ, नीचे मक्के के हरे-हरे खेत लहलहा रहे थे, घाटी मे जगह-जगह सिर उठाये शिलाखण्डों से क्रीड़ा करती लिदर नदी कलकल-छलछल स्वर में सृष्टि के गीत गाती उन्मुक्त गति से बह रही थी। धरती रंग-बिरंगे फूलों से ढकी हुई जैसी इन यात्रियों के स्वागत में कोई कमी नहीं आने देना चाहती थी।

हर वर्ष श्रावण माह में पहलगाम की घाटी में तीर्थ-यात्रियों का सागर उमडता है। युग बीत गए लेकिन आज भी सब कुछ वैसा ही हैं। आज भी अमरनाथ हमारे देश का शिरोमणि तीर्थ है। पुराणों में अमरनाथ यात्रा का प्रचलन ईसा मे भी वर्णित है। कल्हण के ग्रंथ 'राजतरंगिणी' के अनुसार अमरनाथ-यात्रा का प्रचलन ईसा से भी एक हजार वर्ष पहले से चला आ रहा है। पौराणिक कथा के अनुसार अमरनाथ की गुफा में बैठ कर शिव ने पार्वती को अमरकथा सुनाई थी।

एक किवदन्ती यह भी है कि कश्मीर की घाटी पहले एक बहुत बड़ी झील थी जहाँ सर्पराज नागराज शासन करते थे। अपने संरक्षक ऋषि कश्यप के आदेश पर नागराज ने कुछ मनुष्यों को भी वहां रहने की अनुमति दे दी। मनुष्यों को देखा-देखी वहाँ राक्षस भी आ गए







और बाद में वे मनुष्यों तथा नागराज दोनों ही के लिए सिरदर्द बन गए। अन्ततः नागराज इन राक्षसों से रक्षा के लिए कश्यप ऋषि के पास पहुँचे। ऋषि ने अन्य सन्यासियों के साथ भगवान शिव से प्रार्थना की। फलस्वरूप शिव ने प्रसन्न होकर उन्हें चाँदी की एक छड़ी प्रदान की। यह छड़ी अधिकार एवं सुरक्षा का प्रतीक थी। शिव ने आदेश दिया कि इस छड़ी को उनके निवास स्थान अमरनाथ ले जाया जाए, जहाँ वह स्वयं प्रकट होकर अपने भक्तों को आर्शीवाद देंगे। शायद इसीलिए अमरनाथ की यात्रा का नेतृत्व अभी भी चाँदी की छड़ी लिए हुए एक महन्त करते हैं।

ऐसा कहा जाता है कि यहाँ की यात्रा सबसे पहले ऋषि भृगु ने की थी। यहाँ का प्रमुख आकर्षण प्रकृति द्वारा निर्मित लगभग 10 फुट लम्बा हिमलिंग है जो केवल श्रावण पूर्णिमा को ही कन्दरा के ऊपर से टपकने वाला हिमबूंदों से तैयार होता है और अमावस्या को ही लुप्त हो जाता है।

अमरनाथ के लिए एक धार्मिक मान्यता यह भी है कि यहाँ पर शंकर भगवान ने मृत्यु पर विजय और आत्मज्ञान की प्राप्ति के लिए आराधना की थी। एक गड़रिये को बकरी चराते समय इस गुफा का पता चला था। उस मुसलमान गड़रिये के उत्तराधिकारी जो पहलगाम में रहते हैं, अभी भी चढ़ावे का चौथाई भाग लेते है।

इतिहास बताता है कि प्राचीनकाल में मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के एक गाँव से, महन्त चाँदी की छड़ी लेकर यात्रा का प्रारम्भ करता था। किन्तु बाद में इसमें काफी कठिनाई आने लगी। सिखों के पंचम गुरू अर्जुन देव ने छड़ी महन्त को अमृतसर से थोड़ी भूमि दान







में दी, जिससे वह अपनी यात्रा का प्रारम्भ यहाँ से कर सके। वर्षो तक अमृतसर में हजारों श्रद्धालु यात्रियों का समूह एकत्र होता रहा और यहीं से यात्रा प्रारम्भ होती रही, किन्तु 20वी शताब्दी के प्रारम्भ होने के बाद से यह यात्रा श्रीनगर से शुरू होने लगी और आज भी यात्रा श्रीनगर के दर्शनामी अंखाड़े से शुरू होती है।

पहलगाम पर बस मार्ग समाप्त हो जाता है और आगे का मार्ग यात्रियों को पैदल, टट्टुओं पर या डांडियों में बैठकर तय करना होता हैं अमरनाथ की गुफा यहाँ से 48 किलोमीटर दूर है यहाँ से यात्री गर्म कपड़े, जूते, छड़ी तथा पाँच दिन के लिए यात्रा में काम आने वाले पदार्थ खरीदते हैं। घोड़े किराये पर लेते हैं। पड़ावों पर रात बिताने के लिए तम्बू भी साथ रखे जाते है रास्ते में अनेक समाजिक संस्थाओं के द्वारा लंकर व भंडारे आदि लगाए जाते है जहाँ प्राथमिक चिकित्सा का प्रबन्ध भी होता है।

शेषनाग सरोवर की ओर

लिदर नदी मर बने काठ के पुल को पार कर हमारा काफिल दोपहर एक बजे चन्दनवाड़ी पहुँचा यहाँ रात्रि विश्राम के लिए एक डाक बंगला तथा कुछ शेड है। साथ में यात्रियों की सुविधा के लिए चलता फिरता डाकखाना, दवाखाना अनेक संस्थाओं के भंडारे तथा खाने-पीने एवं आवश्यक चीजों के लिए टट्टुओं पर लदी लगभंग सौ दुकानें साथ चल रही थीं। दशनामी अखाड़े में दिन भर भजन-कीर्तन







और रात को आरती का कार्यक्रम चलता रहा और अगले दिन पौ फटने के साथ ही छड़ी का जुलूस बाबा अमरनाथ के जय घोष के साथ फिर चल दिया शेषनाग सरोवर की ओर।

मार्ग में शेषनाग नामक नदी बहती है। नदी पर प्रकृति द्वारा निर्मित लगभग 120 मीटर लम्बा बर्फ़ का पुल है। थोड़ी की दूर चले थे कि आ गई पिस्सु घाटियों की दुगर्म चढ़ाई। इन घाटियों का सारा मार्ग सर्पाकार चक्करदार, पथरीला तथा ऊबड़-खाबड़ है। सारा रास्ता गंगनचुम्बी पहाड़ की खड़ी चढ़ाई का है और आसपास गहरा पाताल, बर्फीली हवा अचानक तेज हो गई और देखते ही देखते बर्फ गिरने लगी। सरगम के सात स्वर भी इस हिमपात की आवाज के सामने फीके लग रहे थे। जय-जयकार करते हुए श्रद्धा और विश्वास लिए यात्री चढ़ते ही गए। वर्षा अब बन्द हो गई ओर हम राम-राम करके सबसे ऊँचे स्थान पिस्सु टाप पर पहुँच गए थे जो 14 हजार फुट की ऊँचाई पर है। यहाँ आक्सीजन की बहुत कमी है और जी मिचलाने लगता है, सांस जल्दी-जल्दी फूलने लगती है।

नीचे उतरना थोड़ा आसान लग रहा था। जोजपाल घाटी होते हुए हम सीधे शेषनाग प्लेटो जाकर रूके और कुछ ही समय में यहाँ तम्बुओं का एक नगर बस गया।

अब हम पहलगाम से तीस किलोमीटर दूर झेलम नदी के उद्गम-स्थल शेषनाग सरोवर पर पहुँच गए थे। यह हमारा दूसरा पड़ाव था। कुण्डली मार कर बैठे हुए एक महान् फणीधर के समान एक अनुपम झील फैली हुई थी जिस पर बर्फ की चादर बिछी हुई थी। जिसके फन से परम स्वच्छ जल शेषनाग नदी का रूप धारण कर







अठखेलियाँ करती पहलगाम की तरफ चली जा रही थी। पार्श्व में खड़ी थी।

ब्रह्मा-विष्णु-महेश नामक तीन चोटियाँ, सब अपने-अपने तम्बुओं में छिपे-अंगीठी जलाये गठरी बने पड़े थे-रात में बाहर झाँकने की हिम्मत नहीं थी, फिर भी कीर्तन-भजन चल रहे थे। घोड़े वाले अंगीठी जलाकर घोड़ों की निगरानी करते स्थानीय भाषा में भजन गा रहे थे। प्रातः जब देखा तो चारों तरफ बर्फ ही बर्फ थी। केवल झील में नीला-हरा पानी चमक रहा था और उसमें कई हिमखण्ड भी तैर रहे थे।

एक जन कथा यह है शंकर भगवान ने अमर कथा सुनाने जाने के पूर्व शेषनाथ को यहाँ नियुक्त कर दिया। जिससे इस स्थान से आगे कोई प्राणी न आये। यहाँ कोई वनस्पति नहीं है, चारों ओर गहरा सन्नाटा छाया रहता है। तम्बू की रस्सियों पर भी डर के मारे पत्थर रख लिये थे जिससे तम्बू उड़ न जाये। सर्दी इतनी थी कि तम्बू के अन्दर भी दाँत बजते थे, फिर भी श्रद्धालु भक्तों ने झील में स्नान किया।

शेषनाग में प्रातः ही कुछ खा-पीकर हम पंचतरणी की ओर चल पड़े। सबसे बर्फ का पुल पार करना पड़ा और फिर आ गई यात्राकी सबसे ऊँची चौटी महागुनसा। इसकी चढ़ाई और आक्सीजन की कमी यात्री को कदम-कदम पर आगे बढ़ने से रोकती है। इसके बाद गहरी ढलान वाला रपटीला मार्ग आता है। हमें यह ऐसा लग रहा था मानों कोई शक्ति हमें अपनी ओर बलपूर्वक खींच रही हो। आगे-आगे एक बंगाली बाबू आ रहे थे। उनके पाँव फिसले और वे एकदम फिसलने लगे गहरी खाई में-घोड़े वाले ने फौरन रस्सी फेंकी







और न मालूम कैसे उनके हाथ में आ ही गई सबने मिलकर उनको बाबा अमरनाथ की जय-जयकार करते ऊपर खींचा। घोड़ा तो इतने में नीच पहुँच कर खत्म हो गया था। मार्ग में कई घोड़ो के कंकाल दिखाई दिये, जिससे लगता था कि मरना यहाँ साधारण बात है। लगभग 13 किलोमीटर चलकर अब हम एक गोलाकार मैदान मे आ गए यह स्थान है पंचतरणी हमारा अंतिम पड़ाव।

तम्बुओं का नगर

हिमाच्छादित प्रहरीनुमा गगनचुम्बी पर्वतमालाओं के मध्य यह स्थान इतना बड़ा है कि एक साथ 10 हजार आदमी ठहर सकते हैं। यहाँ पूरा नगर बसा था तम्बुओं का। छड़ी यात्रियों के दर्शनामी अखाड़ें मे अमरकथा चल रही थी कि जब भोले बाबा पार्वती को अमरकथा सुना रहे थे। एक शुक ने वह कथा सुनकर अमरत्व प्राप्त कर लिया। वह शुक कालान्तर में शुकदेव मुनि हुए जिन्होंने राजा परीक्षित को जन्मेजय के नाग यज्ञ के समय अमरकथा सुनाई। कहते हैं पंचतरणी से निकलते समय पशुपतिनाथ ने नटराज का रूप धारण किया था। तभी जटा से गंगा निकल गई और पाँच भागों में बहने लगी। इसीलिए इसका नाम भी पंचतरणी गंगा है।

प्रात: हम छड़ी यात्रा के पीछे-पीछे चले अमरनाथ गुफा की ओर। आज ही रक्षाबन्धन का पर्व था और सम्पूर्ण हिमलिंग के दर्शन आज ही होते हैं। सामने थी भैरव घाटी की तीखी चढ़ाई का रंग कत्थई, पीला-पीला था और आगे उतार पर था। दो किलोमीटर का बर्फीला मार्ग। हमारे साथ उज्जैन के एक लाला अमारनाथ चल रहे







थे। 20 बार पहले भी वह बाबा के दर्शन कर चुके हैं। उनका कहना है कि वह आजन्म बाबा के दर्शन रक्षाबन्धन के पर्व पर करते ही रहेंगे। इस बार डाक्टर के मना करने पर भी आए थे। खुद को दिल का रोगी भी बता रहे थे। उनका शरीर गर्म तवे-सा जल रहा था। आँखें लाल, दाँत बज रहे थे, और गठरी बने लाला आगे बढ़ते ही जा रहे थे। जैसे ही गुफा का द्वार दिखाई दिया-समीप ही बलखाती एक पहाड़ी नदी तेजी से नीचे उतर रही थी। लाला जी फौरन कम्बल फेंक कर उसके नीचे खड़े हो गए। हमें लगा कि अब गिरे, तब गिरे, लेकिन देखते ही देखते लाल जी ने गुफा के सम्मुख साष्टांग दण्डवत किया और जोर से 'जय बाबा अमरनाथ की जय' करते हुए कम्बल में लिपट कर गुफा की तरफ दौड़े जैसे बच्चा मां को देखकर सब दुःख भूल जाता है।

अब छड़ी का जुलुस समाप्त हो गया था महन्त ने सबसे पहले जाकर छड़ी को शिवलिंग के पास रख दिया। बारी-बारी से जाकर विराट हिमलिंग के सबने दर्शन किये। बाबा अमरनाथ की जय-जयकार से सारी गुफा गूंज गई। 4 बजे हम लोग अमरनाथ गुफा से वापस चल दिये। यहाँ ठहरने की कोई व्यवस्था नहीं हैं। वापस पंचतरणी आकर तम्बू लगाने पड़ते है। जीवन में पहली बार पाँच दिन बाद मैंने कपड़े बदले और पहलगाम आकर फिर स्नान किया तब शरीर हल्का लगने लगा। इसके पूर्व सारा शरीर अजीव तरह का बोझ बना हुआ था। शरीर का बोझ तो उत्तर ही गया। लेकिन मन को जो अकथनीय सुख मिला उसकी याद जीवन पर्यन्त रहेगी।







श्री नगर से अमरनाथ यात्रा

	स्थान का नाम	परस्पर दूरी (कि.मी.)	कुल दूरी (कि.मी.)
1	श्रीनगर	–	–
2	पामपुर	14	14.
3	अवन्तिपुर	14	28
4	बीज बिहार	18	46
5	अनन्त नाग	7	53
6	मटन	10	63
7	पहलगाम	32	95
8	चन्दन वाड़ी	16	111
9	शेष-नाग	11	122
10	पंचतरनी	12	134
11	अमरनाथजी गुफा	7	141

नोट : श्रीनगर से पहलगाम 95 कि.मी मीटर बस मार्ग
पहलगाम से अमर नाथ 46 कि.मी पैदल मार्ग

काशमीर

ऊँचे-2 विशाल पर्वती से घिरी, प्राकृतिक सुषमा से अभिमण्डित काशमीर घाटी को पृथ्वी का स्वर्ग कहा जाता है। ब्रिटेन से कुछ ही छोटी यह घाटी 128 कि० मी० लम्बी व 30 से 40 कि० मी० चौड़ी है भारत का स्विटजरलैण्ड कहीं जाने वाली यह घाटी अपने नैसर्गिक सौन्दर्य के लिए विश्व प्रसिद्ध है इसकी सुन्दरता को चार चाँद लगाते







है यहाँ स्थान-2 पर स्थित स्वच्छ निर्मल पानी के झरने, नदियाँ हरे-भरे बाग बगिचे, ऊँचे-2 पर्वत शिखर, बर्फ से ढकी चोटियाँ तथा हसीन वादियाँ। गर्मियों में यह घाटी ठण्डी व हसीन वादियों के लिए प्रसिद्ध है तो सर्दियों में शीतकालिन खेलों के लिए।

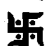
जम्मू

मन्दिरों के शहर के रूप में प्रसिद्ध जम्मू तवी नदी के तट पर काशमीर घाटी के प्रवेश द्वार के रूप में जाना जाता है। 9वी शताबदी में राजा जम्मू लोचन ने इस शहर को बसाया था। आज यह सम्पूर्ण देश से रेल मार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है। मन्दिरों के इस शहर में रघुनाथ मन्दिर, अमर महल, किला आदि प्रमुख रूप से दर्शनीय है।

श्रीनगर

काशमीर घाटी का सबसे सुनदर शहर, प्रदेश की ग्रीष्म कालीन राजधानी तथा घाटी भ्रमण का सबसे अच्छा स्थल श्रीनगर, दिल्ली से 875 कि० मी० स्थित है और 'पूर्व का हीरा' कहलाता है। 378 वर्ग कि० मी० क्षेत्र मे फैल इस शहर मे अनेक दर्शनीय स्थान है।

श्री शंकारचार्य जी का मन्दिर : श्रीनगर से लगी हुई एक पहाड़ी पर स्थित इस मन्दिर मे आद्य श्री शंकराचार्य द्वारा स्थापित शिवलिंग है। श्रीनगर से लगभग एक हजार फीट की ऊँचाई पर बने इस मन्दिर से देखने पर ऐसा लगता है मानो पूरा श्रीनगर ही मन्दिर के चरणों मे बसा है। जिस पर्वत पर ये मन्दिर है उसे भी शंकराचार्य पर्वत ही कहते है। 3 कि० मी० की कठिन चढाई के बाद यात्री मन्दिर







की भव्य मूर्ति के दर्शन करके सारा श्रम भूल जाता है। पुरातत्वविदों के अनुसार ये मन्दिर लगभग दो हजार वर्ष पुराना है। मन्दिर के नीचे शंकर का मठ है। काश्मीर के अन्य मन्दिरों में क्षीर भवानी, अनन्तनाग और मातण्ड मन्दिर प्रमुख हैं। मार्तण्ड मन्दिर पहलगाम मार्ग में है। क्षीर भवानी मन्दिर पर ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी को मेला लगता है।

डलझील : शहर के पूर्व में, नीले व स्वच्छ पानी का संसार, यह झील 8 कि० मी० लम्बी व 4 कि० मी० चौड़ी है। इसके मध्य में छोटे-छोटे बाग व टापू इसकी शोभा में चार चांद लगाते हैं व इसके दोनों किनारों पर पानी में हाऊस बोट है। शिकारों द्वारा इस झील का भ्रमण किया जा सकता है।

निशांत बाग : डल झील के किनारे पर महादेव पहाड़ी की तराई में नूरजहां के भाई आसफजहाँ ने सन् 1634 में बनवाया था। बाग सीढीदार दस भागों में बंटा हुआ है और सबसे ऊपर से डलझील का अनुपम दृश्य देखने को मिलता है। यहाँ अनेक प्रकार के फलदार वृक्ष फूलों से भरी क्यारियां हैं। बाग के बीच में पानी की धारा बहती है व इनमें लगे फव्वारे जो प्रत्येक रविवार को खोले जाते हैं बड़े ही मन मोहक लगते हैं।

शालीमार बाग : जहाँगीर व नूरजहाँ की प्रेम कहानी के अमर प्रतीक ये बाग सन् 1539 में जहाँगीर द्वारा लगवाये गये थे। इस बाग में सभी कुछ है जो एक प्रेमी को चाहिए। इस बाग में चिनारों के वृक्ष व झरनों की शोभा अकथनीय है। यह बाग चार भागों में बंटा हुआ है।

चशमे शाही : अर्थात राजा के झरने शाहजहाँ द्वारा सन् 1632 में एक पहाड़ी के नीचे बनवाये थे। यह एक बहुत सुन्दर बाग है।







इसके चश्मे से बहुत ही शीतल व स्वास्थ्यवर्द्धक पानी निकलता है। आज यहां सरकार द्वारा एक पर्यटक गाँव भी चलाया जा रहा है।

पहलगाँम

पहलगाँम श्रीनगर से 98 कि० मी० दूर पहाड़ियो से घिरी सुन्दर वादियों में स्थित है। समुद्रतल से 2130 मीटर की ऊँचाई पर जितनी प्राकृतिक सौन्दर्यता यहां है वैसी शायद ही कहीं और हो। पहलगाँम अपनी सुन्दरता के लिए विश्व प्रसिद्ध है। कल-कल की ध्वनी से बहता हुआ लीडर नाला इस क्षेत्र की प्राकृतिक सुन्दरता में चार-चांद लगा देता है। इसका पानी बहुत ही ठण्डा होता है व यहाँ मछली पकड़ने का भी विशेष प्रबन्ध है। पहलगाँम की एक विशेषता यह है कि यह स्थान बहुत से पर्वतारोहियों का स्वर्ग है। और यहां कई पर्वतारोहण क्षेत्र है। अमरनाथ जी की यात्रा भी यहीं से शुरू होती है।

गुलमर्ग

एक छोटा और खूबसूरत पर्वतीय पर्यटक स्थल गुलमर्ग श्रीनगर से 45 कि० मी० दूर 2653 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। इसे फूलों की घाटी भी कहा जाता है। दूर-दूर तक ऊँचे-ऊँचे बर्फीले पर्वतों के बीच में घास के मैदान इस घाटी को बहुत ही मनोरम बना देते है। इसे गौल्फर का स्वर्ग भी कहा जाता है और यहाँ संसार के सबसे अच्छे गौल्फ मैदान है। यहीं स्थित है संसार का सबसे ऊँचा गौल्फ मैदान। गुलमर्ग का प्राचीन नाम शिव जी की पत्नी गौरी के नाम गौरी मार्ग था लेकिन सन् 1581 में युसफशाह द्वारा इसका नाम गुलमर्ग रखा गया। यह स्थल शीतकालीन खेलों के लिए विश्व प्रसिद्ध है।







सोनामर्ग

ऊँचे-ऊँचे बर्फीले पहाड़ों से घिरा, श्रीनगर से 84 कि० मी० दूर 2667 मीटर की ऊँचाई पर सिन्ध के किनारे खूबसूरत घाटी में स्थित सोनामर्ग प्राकृतिक सौन्दर्य का धनी है। यहाँ सदा बर्फ रहती है। सोनामर्ग के एक ओर यदि बर्फीली पहाड़ियाँ व ऊँचे-ऊँच पर्वत हैं तो दूसरी ओर सिन्ध दरिया बहता है जो इस घाटी की और भी सुन्दर बना देता है। यहाँ से बालटाल के रास्ते अमरनाथ की यात्रा के लिए एक और मार्ग जाता है।

श्री वैष्णो देवी गुफा

हिन्दुओं का पवित्र स्थान वैष्णों देवी जम्मू से 48 कि० मी० दूर 530 मी० की ऊँचाई पर स्थित है। यह एक गुफा मन्दिर है जो माता वैष्णो देवी, महाकाली, महालक्ष्मी, व सरस्वती को समर्पित है। कटड़ा नामक स्थान से 14 ½ कि० मी० की चड़ाई के बाद यात्री इस पवित्र व मनोरम स्थल पर पहुंचते है।

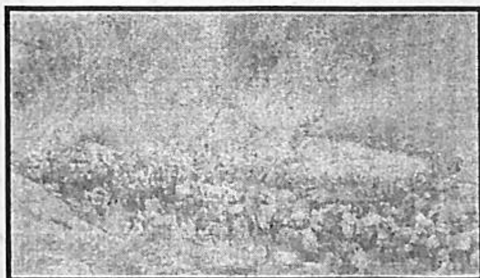
इस सिद्ध पीठ के विषय मे ऐसी मानता है कि जो भक्त श्रद्धा से माता के दर्शनो को जाता है उसकी सभी मनोकामनायें पूर्ण होती है। और वह 'मुंहों मंगियां मुरादां पाकर ही लौटता है। इस प्राकृतिक गुफा में महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती नामक तीन पिण्डियों के दर्शन हैं।







चित्रों के माध्यम से अमरनाथ यात्रा



पिस्सु घाटी में तीर्थ यात्री



शेषनाग में तीर्थ यात्री



पंचतरणी की ओर










आधार कैम्प
पंचतरणी



महागुन्स की
दुर्गम चढ़ाई



गुफा के पास
तीर्थ यात्री



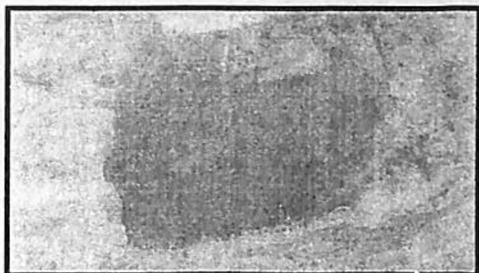








अमरावती नदी की ओर



अमरनाथ जी की पवित्र गुफा

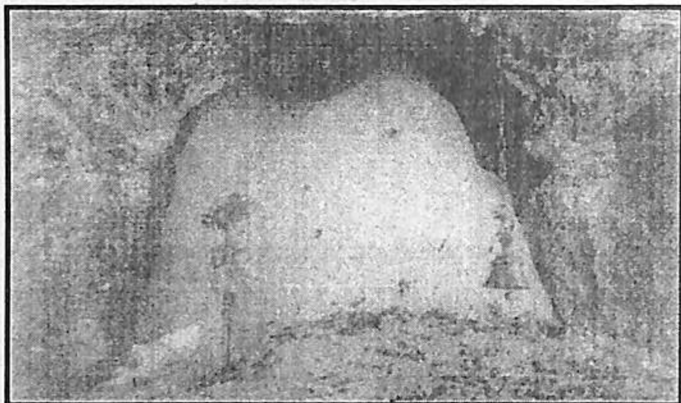




छड़ी मुबारक





दर्शन अमरनाथ जी



